bdkbl 25 *?khlk* dh iVdFkk ¼eUuu HkkMkjh½ % okpu vkj fo'y"k.k

bdkbl dh :ij[kk

25.0 उद्देश्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 ’घीसा’ पटकथा का वाचन
 25.2.1 पटकथा का वाचन
25.3 रूपांतरण के स्वरूप और प्रक्रिया पर चर्चा
25.4 कथावस्तु
25.5 चरित्र-चित्रण
25.6 परिवेश
25.7 संरचना-शिल्प
25.8 दृश्यात्मकता और प्रस्तुति-शिल्प
25.9 मूल्यांकन
25.10 सारांश
25.11 शब्दावली
25.12 बोध प्रश्नों / अभ्यासों के उत्तर
 खंड के लिए उपयोगी पुस्तकें

25-0 mís';

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप :

- महादेवी द्वारा रचित ’घीसा’ नामक रेखाचित्र तथा मन्नू भंडारी द्वारा उसके पटकथा में रूपांतरण के विषय में बता सकेंगे?
- रूपांतरण की प्रक्रिया के विषय में चर्चा कर सकेंगे?
- कथानक, चरित्र-चित्रण, भाषा आदि की दृष्टि से इस पटकथा का विश्लेषण कर सकेंगे।

25-1 iLrkouk

पिछली इकाइयों में आपने एकांकी, नुक्कड़ नाटक और रेडियो नाटक पढ़े। प्रस्तुत इकाई में आप महादेवी वर्मा का रेखाचित्र ’घीसा’ के आधारपर मन्नू भंडारी द्वारा टीवी के लिए लिखी गई पटकथा का वाचन और विवेचन करेंगे। ’घीसा’ को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है जिसे खंड 6, इकाई 37 में आप पढ़ सकेंगे। हमारा सुझाव है कि इस इकाई को पढ़ने से पहले आप इकाई 37 का अध्ययन करें ताकि इस इकाई को समझने में मदद मिल सके।

पटकथा का मायने है पर्दे पर प्रस्तुति के लिए लिखी गई कथा यानी सिनेमा या टेलीविजन के लिए फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई स्क्रिप्ट। रेखाचित्र को पटकथा में रूपांतरित करने के मायने हैं कि पढ़ने के लिए लिखी गई रचना (यानी ’घीसा’ नामक रेखाचित्र) को दृश्य रूप में प्रस्तुति के लिए ढाला गया है। इसे पढ़ते हुए आपकी समझ में आएगा कि एकांकी और पटकथा में क्या अंतर है। साथ ही, आपको पाठ्य और दृश्य के बीच का अंतर भी समझ में आएगा। एक और बात है जिस पर यहाँ आपको ध्यान देना होगा कि मंच पर नाटक के रूप में प्रस्तुति और फिल्म-प्रस्तुति दोनों ही रचना की दृश्य प्रस्तुतियाँ होती हैं किंतु दोनों के प्रस्तुति माध्यम अलग-अलग हैं। मंच-प्रस्तुति अभिनेताओं द्वारा जीवंत प्रस्तुति होती है जबकि फिल्मी परदे पर दिखाने के लिए प्रस्तुति की वीडियो रिकार्डिंग की जाती है जिसमें विभिन्न उपकरणों और विविध प्रकार की तकनीकों का सहारा लिया जाता है। दोनों प्रस्तुतियों की स्क्रिप्ट की जरूरतें अलग-अलग होती हैं। इससे पहले आपने जो एकांकी पढ़े हैं वे सब मंचीय प्रस्तुति के लिए लिखे गए हैं जबकि ’घीसा’ पटकथा के रूप में लिया गया है।

प्रस्तुत इकाई में, आप दृश्य प्रस्तुति की जरूरतों और पाठ्य रचना में उन जरूरतों के हिसाब से अनुकूलन के विषय में भी जान सकेंगे। हम चर्चा कर चुके हैं कि ’घीसा’ मूलतः महादेवी वर्मा द्वारा लिखा गया एक रेखाचित्र है। रेखाचित्र विधा के बारे में भी आप इस इकाई में जान सकेंगे।

egknoh oek हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका हैं। कवयित्री, संस्मरणकार, रेखाचित्रकार तथा निबंधकार के रूप में उनकी ख्याति है। उनका जन्म 1907 में फार्रुखाबाद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर तथा आगे की शिक्षा प्रयाग में हुई। संस्कृत में एम.ए. करने के पश्चात वह आगे अध्ययन के लिए विदेश जाना चाहती थीं किंतु गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने अपनी योजना स्थगित कर दी और सन् 1932 में हिन्दी माध्यम से नारी शिक्षा प्रसार के लिए प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की और प्रधानाचार्य का कार्यभार संभाला। 1960 में महादेवी प्रयाग महिला विद्यापीठ की कुलपति बनीं। गद्य और पद्य दोनों के क्षेत्र में अपने अनुपम योगदान के लिए विख्यात महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी कविता की प्रमुख धारा छायावाद के चार कवियों में से एक हैं। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'दीपशिखा' हैं। गद्यकार के रूप में महादेवी का अवदान रेखाचित्र, संस्मरण और ललित निबंध के क्षेत्र में विशेष है। उनके रेखाचित्र 'अतीत के चलचित्र' और *Lefr dh j[kk,* नाम से संकलित है और संस्मरण 'पथ के साथी' नाम से। 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक निबंध संग्रह स्त्री विमर्श पर उस ज़माने में लिखा गया महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। उन्होंने पशु-पंक्षियों पर भी बहुत मार्मिक संस्मरण लिखे हैं जो 'मेरा परिवार' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं। रचनाकार होने के साथ ही महादेवी का सामाजिक बौद्धिक कार्यकर्ता के रूप में निरंतर सक्रिय रहीं। उनकी सामाजिकता का विस्तार कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी जैसे समकालीन दिग्गजों से लेकर सामान्य दीन-हीन जनों तक रहा।

हिंदी की सुप्रसिद्ध कथाकार eUu HkMkjh का जन्म 3 अप्रैल 1931 को भानपुरा, मध्य प्रदेश में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर और उच्च शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापन कार्य किया। उनकी ख्याति का मूल आधार उनके उपन्यास और कहानियाँ हैं। 'आपका बंटी', 'महाभोज' जैसे उपन्यासों तथा 'यही सच है' 'अकेली' जैसी कहानियों से उन्हें विशेष ख्याति मिली। उनकी कहानी 'यही सच है' पर बनी फिल्म 'रजनीगंधा' बहुत प्रसिद्ध हुई। मन्नू भंडारी ने फिल्मों के लिए पटकथा तथा संवाद लेखन भी किया। प्रस्तुत इकाई भी उनके इसी दिशा में एक प्रयास पर आधारित है।

25-2 *?kh l k* iVdFkk dk okpu

हम चर्चा कर चुके हैं कि 'घीसा' नामक पटकथा महादेवी वर्मा के रेखाचित्र पर मन्नू भंडारी द्वारा तैयार की गई है। अतः इसके वाचन की प्रक्रिया में पटकथा के साथ-साथ हम रेखाचित्र को भी प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि आपके मन में दोनों की तुलनात्मक तस्वीर उभर सके और आप समझ सकें कि पढ़ने के लिए लिखे गए कथ्य को दृश्य प्रस्तुति के लिए रूपांतरित करने की प्रक्रिया लेखक से क्या-क्या अपेक्षा करती है।

ध्यान देने की बात है कि पढ़ने के लिए लिखी गई रचना को जब पर्दे पर प्रस्तुत करने के लिए लिखा जाता है तब इसमें मूलकथा तो वही रहती है किंतु उसका वर्णन करने के स्थान पर उसे दृश्य बनाया जाता है। दृश्य बनाने की प्रक्रिया में उसे पात्रों के संवाद (वार्तालाप) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन सम्पूर्ण विवरण को संवाद के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता। वर्णन में कुछ हिस्सा पात्रों के कार्य अथवा गतिविधियों का होता है तथा कुछ उनके बाह्य स्वरूप और स्वभाव का जिसे पटकथाकार अथवा नाट्य रूपांतरकार संवादों के साथ प्रस्तुति निर्देश अथवा रंग-संकेत के रूप में शामिल करता है। चूँकि कैमरे के माध्यम से दृश्य बनाया जाता है अतः प्रस्तुति निर्देश में यह भी संकेत दिए जाते हैं कि कैमरा कहाँ, कितनी देर, किस प्रकार फोकस करेगा। अतः संवाद की भाषा सक्रिय कार्यकलाप की भाषा होती है। 'घीसा' संस्मरण और पटकथा दोनों साथ-साथ पढ़ते हुए आप इस अंतर को समझ सकते हैं।

25-2-1 iVdFkk dk okpu

?kh l k

¼n'; egknoh th d dej l vkjEHk gkrk gA o dN fy[ku e 0;Lr gA mudh v/kM lfodk vkrh g··· gkFk e l[k g, diM g½

egknoh th % बुआ, कल का इतवार गंगा पार के किसी गाँव में बिताएँगे··· कुछ खाने-पीने का इंतजाम कर लेना।

cqvk % ¼vk'p;Z vkSj vfo'okl ds feys-tqys Hkko ls½ कहाँ बिताएँगे?

egknsoh th % झूँसी के खँडहरों में ¼gYds-ls eqLdjkrh gSa½

cqvk % हे भगवान्! और कहीं जाने को नहीं मिला? अरे इतवार के दिन लोग सैर-सपाटे को निकलें.... मिलना-जुलना करें.... lyhek-थियेटर देखें और ई जाएँगी झूँसी।

¼egknsoh th dh eqLdjkgV gYdh gWalh esa cny tkrh gSA cqvk mlh eqnzk esa ckgj fudyrh gSa.... dkbZ ukSdj fey tkrk gSA mlh ls....½

cqvk % अरे सुन रहे हो तुमकृकल झूँसी का सैर-सपाटा होयगा अब। बड़ा बाग-बगीचा है न वहाँ.... अरे हमार तो बेमौत ही मरण है।

¼cM+cM+krh gqbZ dejs ls ckgj fudy tkrh gSa½

n`'; lekIr

u;k n`';

¼Hkkjr dk le;A xaxk ikj uko esa egknsoh th vkSj cqvkA eYykg dkbZ xhr xkrk gqvk nwljs fdukjs ij ys tkrk gSA fdukjs ij vkjrh dk >wMA dkbZ gkFk-eqag /kks jgh gS.... dkbZ ikSj jxM+ jgh gS.... dkbZ ikuh esa ?kqldj ?kM+k Hkj jgh gSA vkjrh dh utj tSls gh egknsoh th ij iM+rh gS.... lcds gkFk tgk¡ ds rgk¡ #d tkrs gSa vkSj pgjs ij vk'p;Z uko ls mrj dj egknsoh th dqN nsj mudks ns[krh gSa] fQj xk¡o dh vksj eqM+ tkrh gSa½

¼n`'; xk¡o dh xfy;ksa esa pyk tkrk gS.... xkcj-dhpM+A dPps edku.... ux /kwy [kyrs cPpsA lc budks vk'p;Z ls ns[krs gSa.... ,d-nks cPps dkSrwd esa lkFk gks yrs gSaA cqvk dk pgjk mudh vizlUurk dks crkrk gS½

¼n`'; ,d [kqys eSnku esaA ,d cM+s ?kus isM+ ds uhps pcwrjk cuk gSA egknsoh th pkjksa vksj ns[krh gS.... fQj mlh pcwrjs ij cSB tkrh gSa.... iYys esa ls ,d fdrkc fudkyrh gSA cqvk ls½

egknsoh th % जाओ, तुम गाँव वालों से मेल-मुलाकात करके आओ.... खाने के समय लौट आना।

cqvk % अउर का.... अब यहाँ मुँह सीकर तो cbBk नहीं जाएगा। ¼[kkus dk FkSyk Bhd ls j[kdj pyh tkrh gSA pcwrjs ls dqN nwj cPpksa dk ,d >qaM iM+ ls dPps vke rksM+ jgk gSA ,d yEck yM+dk ,d NksVs yM+ds ¼?khlw½ ds dU/ks ij p<+k gqvk vke rksM+-rksM+dj Qsad jgk gSA ckdh cPps cVksj jgs gSaA egknsoh th i<+uk NksM+ mUgha cPpksa dks ns[kus yxrh gSaA yEck yM+dk mrjrk gS rks vkeksa dk cVokjk gksrk gSA ?khlw dks dsy nks NksVs-NksVs vke idM+k fn;s tkrs gSA½

?khlw % (रुआँसे स्वर में) हमको कुल दो आम? हम तो bÙkh देर तक घोड़ा बने रहे।

yM+dk % घोड़ा नहीं तो का सवार बनेगा.... cknlkg? (सब हँसते हैं)

दूसरा लड़ता : भाग यहाँ से।

¼?khlw jksrk gqvk pyk tkrk gSA egknsoh th] tks nwj ls lkjk n`'; ns[k jgh Fkh] cPpksa ds ikl tkrh gSA cPps FkksM+k lgedj pqi gks tkrs gSA½

egknsoh th % तुम लोग पढ़ते हो? (cPps dsoy ,d-nwljs dh rjQ ns[krs gSa½ स्कूल जाते हो तुम?

yM+dk% ikBlkykvks नाहीं हिया....कइसे जाएँगे?

yM+dk% पाठशाला नहीं है यहाँ? (cPps dsoy xnZu fgykrs gSaA vk'p;Z ls½& तो इस गाँव का कोई बच्चा पढ़ता ही नहीं?

yM+dk% सहर dmu जा सकत है पढ़ै की खातिर?

nwljk yM+dk % रमेसर काका का लड़का जाता है सहर....ऊँची किलास में पढ़त है....अंग्रेजी भी।

¼egknsoh th tSls lkp esa iM+ tkrh gSA½

egknsoh th% अगर पाठशाला हो तो पढ़ोगे? ¼yM+ds pi— ,d—nwljs dk eqg ns[krs gSa½ बोलो।

yM+dk % किताब—सलेट तो gb;s नाहीं पढ़िंगें कइसे?

सलीमा—सिनेमा; बइठा—मुँह सी कर बैठना (मु.)—चुप बैठना; इत्ती—इतनी; बादसाह—बादशाह; पाठसालाओ—पाठशाला ही; कउन—कौन; हइये—है ही।

egknoh th% अच्छा, अगर किताब-स्लेट मिले तो पढ़ोगे? (बच्चे थोड़ी देर चुप) मन करता है पढ़ने का?

yMdk % पढ़ाइगा कौन··· गुरुजी तो हइये नई।

nl jk yMdk % अऊर सिलेट-किताब देगा कउन?

egknoh th% मैं पढ़ाऊँगी···स्लेट किताब भी मिलेगी फिर तो पढ़ोगे।

cPp % हाँ, तब तो जरूर पढ़िहैं। (बच्चों के चेहरे पर उल्लास दिखाई देता है)

egknoh th% ठीक है सब बच्चों को जाकर बता दो कि हर इतवार को यहाँ (पेड़ के नीचे इशारा करके) पाठशाला लगा करेगी···सब बच्चे पढ़ने आया करेंगे।

¼cPp nkM tkr gA n'; xfy;k e] cPp tl MkMh ihV jg gkA gj brokj ikBlkyk yfx g------ fdrkc-LyVvk fefyg---- x# th i<kb g---- ihiy ry lc cPpk ykxu vk; tk;A½

¼vkj cPp ml >.M e feyr tkr gA cPpk dl fy, ;g ,d [ky gk tkrk gA ,d [kyh txg e rhu-pkj c tx fpye Qdr ckr dj jg gA½

,d c tx %ऊ जो सवेरे गाँव मा आई रहीं···पाठसाला खोले खातिर ही आई रहीं सायद।

nl jk % भला हो उनका···दो अच्छर इन fu[kVV लरिका के पढ़ा देई तो ई भी अकिल की दुई बात सीख जइहैं।

तीसरा : अउर का··· नाहीं तो सारा दिन gMnx।

¼dejk fQj cPpk d lkFk-lkFk pyk tkrk gA ?kk"k.kk djrk cPpk dk tyl xyh-xyh ?ke jgk gA½

n'; lekIr

u;k n';

¼ogh fnuA 'kke dk le;A unh fdukj egknoh th vkj cvk uko dh irh{kk dj jgh gA cvk fVfQu] njh] fdrkc fy, cncnk jgh gA½

cvk % अरे इत्ता बड़ा एक इसकूल उहाँ··· उससे पेट नाहीं भरा जो अब एक पाठसाला हिंयाओ खुलेगी।··· इतवार को कछु घड़ी चैन से सोते··· बैठते, किसी से बतियाते सो अब इन लड़कन से माथा फोड़ो।

(तभी शाम के धुँधलके में एक स्त्री प्रकट होती है। कपड़ों से दरिद्रता और चेहरे से वेदना प्रकट हो रही है···कभी सुन्दर सुडौल रही होगी, इसका आभास जरूर मिल रहा है। कन्धे से जिस अर्द्ध नग्न बच्चे को वह पकड़े है उसके चेहरे पर भी करुणा पुती हुई है। वह डर और संकोच के मारे माँ की टाँगों से चिपका हुआ है। पास आने पर महादेवी जी सवेरे के देखे हुए घीसा को पहचान लेती हैं। स्त्री झिझकते हुए)

L=h % आप का हिंया पाठसाला खोल रही हैं? ¼cvk lkeu uko ij p<k jgh g] इसलिए इनकी बातें नहीं सुनतीं।)

egknoh th% ¼?khl k l½ rq e i<kx ml e\ वह नजरें नीचे किए-किए धीरे से सिर हिला देता है।

L=h % बहुत सौक है इसे पढ़ै का···आज बाप होत तो सहर Hk tdvk पढ़ात (एकाएक पति की स्मृति में खो जाती है) ई तो मुहौं ही नहीं देख सका बाप का···उनके भी कित्ते अरमान रहे एहिके खातिर···gbtk सबका तो लील गवा।

egknoh th % और कोई नहीं है घर में? (L=h xnu fgyk nrh g) तुम क्या करती हो?

L=h % का करि? दूसरा का घरन मा लीप-पोत के बस गुजारा करत हैं···ई काम भी तो नाहीं करै देत हैं गाँव वाला हमका··· दो कोस दूर जान पड़त है···गाँव वाले तो अइस बैर राखत हैं हमसे कि का बताई···(okD; v/kjk NkM nrh gA pgj ij n%[k vkj Øk/k dk feyk-tyk Hkko½

egknoh th % (vk'p;l) बैर क्यों रखते हैं?

L=h % ¼xgjh lkl NkMdj) बेवा होय के बाद हम काहू के घर नाहीं बइठै जौन से? हम नाहीं बइठ सकत कोई के घर। अब ई भी कोई जबरजस्ती है?···अरे हम सिंह का मेहरारू होइके सियारन के घर काहे जाब?

निखट्टू–ठलुआ, बेकार; हुड़दंग–शरारत, उपद्रव; भेजकैओ–भेज कर भी; हइजा–हैजा।

fgnh ,dkdh vkj vU; n'; fo/kk,¡

egknoh th : (ikl x cnyu d fy,½ क्या नाम है तुम्हारा? ¼?kh lk pi)

L=h % एक तो सुभाव का ही संकोची, फिर गाँव का लरिका लोगन हर बखत gMdkor रहत··· घर मा ही बइठा रहत है बिचारा···अरे हमार गुस्सा बच्चा पर काहे निकालत हो? ¼?kh lk l½ नाम बोल न।

?kh lk % (vk[k mlh rjg uhp fd, g,] /khj l) घीसा।

(cvk uko ij l fpYykrh gA½

cvk % अरे अब आओ न···रात भी हिंया ही काटे का इरादा है का?

egknoh th% (l;kj l ?kh lk dk xky FkiFkikr g,) इतवार को पढ़ने ज़रूर आ जाना। (uko dh vkj c< tkrh gA½

n'; lekIr

u;k n';

¼vxyk brokjA Hkkj dk le;A iM d uhp ?kh lk vkj mldh ekA ek tYnh-tYnh pcrj dk yhi jgh gA½

ek % तू तो बहुत देर कराय दिही रे घीसा···दुई कोस जाए का काम पे। देर होय से मजूरी न मिली वां? ¼ogk l ,d rjg l nkMrh gb tkrh gA ?kh lk iM dh ,d iŸkh okyh Vguh ydj pcrj d vkl-ikl >kM yxkrk gA ,d rjQ lkQ djrk g rk nljh rjQ iŸk fxj tkr g···m/kj yxkrk g rk igyh txg fQj iŸk fxj tkr gA vkl-ikl [kM yMd gl jg gA yfdu ,d ckj lkj iŸk lkQ dj yrk g rk nj [kM gkdj ikB'kkyk dk evk;uk djrk gA ikB'kkyk lkQ g] nkMdj ?kkV dh vkj tkrk gA ½

n'; lekIr

u;k n';

¼?kh lk fdukj [kMk vku okyh ukok dk n[k jgk g··· vk[k ij gFkyh dh vkV cukdj nj okyh ukok dk n[krk gA nj ,d uko e x#th fn[kkb nrh gA nkMdj fQj ikB'kkyk dh rjQ vkrk g···**x#th vk; xb···x#th vk; xb** lcdk lpuk nrk gA ,d ckj fQj ikB'kkyk dk >kMrk gA lpuk ludj vkl-ikl fxYyh-M.Mk [kyr yMd] iMk ij p< yMd ogk vk bdVB gkr g··· ij ?kh lk fQj fdukj dh vkj nkM tkrk gA½

n'; lekIr

u;k n';

fdukj ij ?kh lk Lokxr d fy, r;kj [kMk gA egknoh th d mrjr gh ueLdkj djrk gA egknoh th xky FkiFkikdj l;kj djrh gA uko okyk LyV-fdrkck dh ,d xBjh vkj ,d Cyd-ckM mrkjrk gA½

cvk % गठरी तो हम उठाय लेहि···पर ई तख्ता हमसे न उठिहें···बुलाय लो किसी को ¼?kh lk nkMdj Cyd ckM viu flj ij j[k yrk gA½

egknoh th% अरे, ले जा सकोगे तुम? ¼?kh lk rk nkM tkrk g] tl flj ij Nkrk ruk gk½

n'; lekIr

u;k n';

¼d{kk yxh gbZ gA iUng-chl cPp cB g, g vkj lcdk /;ku cvk d gkFk dh LyV-fdrkck ij yxk gvk gA lcl ihN] ,d vkj gVdj ?kh lk cBk gvk g pipki··· og x#th dh vkj ,dVd n[k jgk g] tk ckM ij v vk b b fy[k jgh gA½

cvk % एक-एक करिके आओ अऊर अपनी सिलेट-किताब लैइ जाओ।

¼cPp ,d lkFk >iVr g] HkxnM-lh ep tkrh gA cvk QVdkj dj fQj lcdk fcBkrh gA doy ?kh lk g] tk viuh txg l fgyk Hkh ughA½

हड़कावत–हड़काते हैं, परेशान करते हैं; ओट–घेरा, पर्दा।

cqvk % बइठो सब अपनी-अपनी जगह। ऐसी लूट-खसोट मचाए से काहू को कुछ न देबै, पहिले बइठ जाओ चुपचाप। (एक-दो को झापड़ भी जड़ देती है। किसी तरह बच्चे फिर अपनी-अपनी जगह बैठते हैं। अब बुआ खुद बाँटती है।)

,d yM+dk: एक हमरे भाई के वास्ते...ऊ आज आया नहीं।

cqvk% अरे ई का ijkslk बट रहा है? ¼tc ?khlk dk LdwyV-fdrkc feyrh gS rks og mUgsa ekFks ls yxkrk gSA½*

¼egkn¨oh th ?khlk d¨ cPpk¨a ls vyx 0;ogkj dks n[krh gSa fQj fy[kus yxrh gSA½

cqvk% हम जरा गाँव में जाई। ¼pyh tkrh gSA d{kk 'kq: gksrh gSA v ls vukj... vk ls vke...cPps nksgjkrs gSaA dn es NkVk gksus ij Hkh lcls ihNs cSBs ij rYyhurk ls nksgjkrs g,, ?khlk ij mudh utj jgrh gSA½

egkn¨oh th% घीसा तुम सामने आकर बैठो। ¼?khlk ,d {k.k dqN fIVfiVkrk gS] fQj mBdj vkrk gSA lkjs yM+ds mi{kk ls mls n[krs gSa... mlds cSBrs gh FkksM+k nwj ljd tkrs gSaA egkn¨oh th n[krh gSa ij ckyrh dqN ugha i<kbZ fQj 'kq: gksrh gSA ihNs cSBs ,d-nks yM+ds gsl jgs gSa... dqN Nhuk->iVh dj jgs gSa... ij ?khlk dh utjsa egkn¨oh th d¨ pgjs ij bl rjg fVdh gSa ekuks mudk lkjk Kku lks[k ysxh... cM+h yxu ds lkFk og nksgjkrk gS... mlds pgjs dks Qkdl fd;k tk,A½

n'`; lekIr

u;k n`';

¼ogh fnuA xkao dh ,d xyh esa efp;k ij cqvk cSBh gSA ikp-N% vkSjrsa tehu ij cSBh cMs lEeku ls mudh ckrsa dj jgh gSA½

,d vkSjr% हम सुना तो रहै कि पाठसाला खुलि हैं...पर भरोसा नाहीं हुआ...अरे कउन QksdV में आइके पढ़ाई...किताब-सिलेट देइ।

cqvk % हमार दिदिया का न पूछो...जइसी ज्ञानी... वइसी ही दानी... अरे ई का.... वहाँ सहर मा जाने का-का तो देत रहत हैं। (pgjs ij xoZ dk Hkko½

nlljh vkSjr % तुम उनका का लागत हो?

cqvk % अरे लागत का... समझ लेओ कि ऊ हमार सब कुछ अउर हम उनका सब कुछ... हम न खिलाई तो सारा-सारा दिन खानाओ न खाई...बुआ बिना पानी का घूँट तक तो हलक के नीचे न उतारिहें।

¼vkSjrsa cgqr iHkkfor gksrh gSA½

,d vkSjr% ¼FkksM+k ikl ljddj] vkokt dks /khek djds½ तो फिर तुम एक बात गुरुआइनजी से जरूर बोल देव...घीसा का न बिठाया करें पाठसाला मा...ठीक नाही उ लरिका।

cqvk% काहे?

vkSjr % ¼xnZu >Vd dj½ बाप का ही कौनों पता नाहीं... बेवा भई तो कित्ते लोग तो घर बिठाइवे का बोले रहे पर नाहीं...बड़े घरन की सती-सावतरी का ढोंग...अउर फिर जाने काहू के संग मुँह काला करिस है।

cqvk % अच्छा?

vkSjr % अउर का? अरे जदि कछु ऊँचा-नीचा हुई गवा तो ¼gkFk ds b'kkjs ls ldsr djrh g½ पर नाहीं बच्चाओ जनेंगी हम सबकी छाती पर...हम तो अपना लरकन-बच्चन से कहि दीन कि दूरै रहा करें...गन्द का ढेर।

n'`; lekIr

u;k n`';

¼ogh fnuA egkn¨oh th vc pcwrjs ij cSBh gS vkSj cPps lc viuh-viuh txg ijA½

egkn¨oh th% अच्छा तो सफ़ाई के बारे में क्या-क्या सीखा? एक-एक करके बोलोगे।

परोसा–भोजन; फोकट–मुफ्त।

fgnh ,dkdh vkj vU;
n`'; fo/kk,¡

,d yMdk% रोज मंजन करना है।

nljk yMdk : रोज···सिनान···नहीं नहाना है। ¼x#th d pgj ij eLdjkgV½

rhljk % इतवार को नाखून काटना है।

?kh l k : रोज कपड़े धोना है।

egknoh th% शाबाश! तुमने तो बड़ी जल्दी पाठ याद कर लिया···पर ये सब केवल याद करने के लिए नहीं बताया है···अगली बार तुम सब साफ-सुथरे होकर आओगे क्लास में···दाँत माँजकर, नहाकर, साफ कपड़े पहनकर···समझे। अब जाओ। आज की छुट्टी। घर जाकर खाना खाओ।

(cPp 'kkj epkr g, Hkkxr gA ?kh l k /khj-/khj pydj FkkMh nj ,d iM d uhp tkdj diM e l l[kh jkVh fudkydj [kku cB tkrk gA ihN gku d dkj.k egknoh th mls ugh n[k ikrhA cvk dk io'kA½

egknoh th% ¼g l dj½ हो गई गाँव की पंचायत?

cvk % पंचायत का···· थोड़ा मेल-मिलाप करै वास्ते गए रहा। (egknoh th dk [kkuk fudkydj nrh gA mldh utj ?kh l k ij iMrh gA½ सुनी दिदिया, ई लड़का अब पाठसाला में ना पढ़ी।

egknoh th% क्यों?

cvk % अरे अब हमसे बहस न करौ···कछु बात है, तभी तो कहत हैं।

egknoh th% क्या बात है?

cvk % ¼eg fldkMdj½ अब का बताई··· माँ बड़ी pfjŸkj वाली।

egknoh th% ¼eLdjkdj½ तो मैं माँ को कहाँ पढ़ा रही हूँ?

cvk % अउर बाप काओ कौनौ पता नाही···जाने केहर का तो बेटा?

egknoh th% बाप का भी मुझे क्या करना। पढ़ने में तो लड़का सबसे होशियार है। ¼egknoh th mBdj ?kh l k d ikl tkrh g] mlk nk dy nrh gA ?kh l k ,dne fldM···fQj pipki l y yrk gA½

n`'; lekIr

u;k n`';

¼,d nk fnu ckn A xko e cPp mlh rjg gMnx epk jg gA xYyh-M.Mk] [kyuk- >xMuk] iM ij p<uk A deijk bu lc ij l gkrk gvk ?kh l k dh >kiMh ijA dkBjh v/kjhA NkVh-lh dlih d vkx og fdrkc n[k-n[kdj LyV ij fy[k jgk g··· ckyrk tkrk g&v···vk···b···Fkdh-ekn h ek ?kl rh gA½

?kh l k % पइसा मिलै····साबुन लाई हौ?

ek % बीच में पइसा को देत है बेटा···रोज कल-कल कहि देत हैं।

?kh l k% ¼[kht Hkj Loj e½ हम कपड़ा कइसे धोइबे····गुरुजी साफ होइके आवन का कहि रहे।

ek % ¼pYg e ydfM;k Mkyr g,½ ले अउबै बेटवा··· कल जरूरै ले अउबे।

?kh l k % पक्की बात?

ek % हाँ, पक्की बात।

?kh l k % (प्रसन्न होकर) माई, गुरुजी का सब पाठ हम सीख लिए····लिख के दिखाई? ¼fQj g l rk g½ पर तू का समझेगी? ¼ek Hkh eLdjkrh g½ फिर भी तू देख तो····

¼tYnh l mBdj iVVh /kkrk g····*l[k-l[k iVVh····pUnu iVVh* dgrk gvk LyV dk i[k dh rjg fgykdj l[kkrk gA ek eX/k Hkko l cV dk n[krh g···· pgj ij l[k vkj lrk"k dk HkkoA ?kh l k fy[ku cB tkrk gA

n`'; lekIr

चरित्तर (व्यंग्यात्मक प्रयोग)– ढोंगी, झूठा नाटक करने वाली

u;k n`';

¼jfookj dk fnuA cPps ikB'kkyk ds vkl-ikl [ksy jgs gSa] tSls gh x#th dks vkrk ns[krs gSa] viuh-viuh txg py s tkrs gSaA egknsoh th vkdj ns[krh gSa---- ikB'kkyk /kwy-iŸkksa ls Hkjh gqbZ gSA os cPpksa es ?khlk dks <w<+rh gSa&og ugha gSA½

egknsoh th % आज पाठशाला साफ क्यों नहीं हुई? (lc pqi pki) घीसा कहाँ है?

,d yM+dk% घाट पर।

nwljk yM+dk % उहिकी माई का मजूरी का पइसा तो रात मा मिली रहै।

rhljk yM+dk% साबुनौं सवेरे खरीदे रहा----अब घाट पर नहाय रहा है।

pkSFkk yM+dk % कपड़ा ओ धोय रहा है।

igyk yM+dk% आप नहाय के धोय के आवै का कहि रहे ना?

rhljk yM+dk% हम नहाय तो कल ही लिए पर कपड़ा---- (cM+s Hkkoiw.kZ rjhds ls dgrk gS) ---- lcdks crk;s fcuk igys gh ---- पर ई साफ है। (egknsoh th ds pgjs ij Hkh eqLdjkgV vk tkrh gSA)

(egknsoh th ,d utj lkjs cPpksa ij Mkyrh gSA fdlh us eqg jxM+dj bruk lkQ dj fy;k gS fd udyh pgjs dk vkHkkl nsrk gS----dkbZ dksbZ cfu;ku-dPNk igudj gh vk x;k] dkbZ cM+s Hkkbz dh deht igudj vk x;k gS---- ,d fofp= n`'; mifLFkr gS---- ij lcus mudh vkn'k dk ekuk t:j gSA)

egknsoh th % अच्छा, आज घीसा नहीं आया तो तुममें से कोई अपनी पाठशाला साफ नहीं कर सकता था? (yM+ds ,d-nwljs dh rjQ ns[krs gSA)

yM+dk % सफाई तो घीसा ही करता है---ऊई आकर करिहै सफाई।

egknsoh th% क्यों पढ़ते तो तुम सब हो----सफाई वो अकेला क्यों करेगा?

¼cPps fQj ,d-nwljs dh rjQ ns[krs gSa bruh esa ?khlk vkrk fn[kkbZ nsrk gSA cPps ,d lkFk fpYykrs gSa&?khlk vk; xo---?khlk vk; xokA xhys cky] xhys diM+s igus ?khlk vk[ks uhph fd,] vijk/kh dh rjQ x#th ds lkeus vk [kM+k gksrk gSA mldk jke-jke tSls bl vijk/k ds fy, {kek-;kpuk dj jgk gksA½

?khlk % ¼gkFk tksM+dj cgqr /khes Loj esa½ देरी के वास्ते माफी ¼O;Fkk ls egknsoh th Hkhrj rd fly gj tkrh gS---- viuh ue vk[kksa dk cPpksa ls fNikus ds fy, os ckgj dh rjQ eqM+ tkrh gS---- ysfdu dqN nsj rd os dqN fy[k ugha ikrhA½

yM+dks dh vksj ls % अ से अनार---- आ से आम।

n`'; lekIr

u;k n`';

¼jfookj dk fnuA cPps isM+ ds uhps ;k vklikl [ksy jgs gSA dksbZ ?khlk ,d dPNk igudj ikB'kkyk >kM+ jgk gS----fQj isM+ ij j[kh gqbZ pVkbZ mBkdj >kM+rk gS---- pcwrjs ij fcNkrk gSA Cyd ckM+ dk isM+ ls fVdkdj Dykl r;kj dj nsrk gSA fQj viuk u;k dqrkZ igudj fdukjs dh vksj nkSM+ tkrk gSA½

n`'; lekIr

u;k n`';

¼ogh fnuA Dykl py jgh gSA ckgj ij iu?kV---- ljiV---- gypy 'kCn fy[kk gS, gSA½

egknsoh th% देखो बच्चों, कितनी जल्दी तुम लोग अपना पाठ सीख रहे हो। पहले तुमने अक्षर सीखे.... अब शब्द भी सीख गये। चलो, आज इसी खुशी में तुम्हें जलेबी मिलेगी। (cqvk ls½ बुआ, बच्चों में जलेबी बाँट दो।

¼viuh-viuh txg ls mBdj cPps 'kksj epkus yxrs gSa&*tysch feysxh---- tysch [kk,xs---* cqvk dh vksj >iVrs gSA½

cqvk % ¼QVdkjrs gq,½ पहले लैन लगाओ----तब मिलिहैं जलेबी।

fgnh ,dkdh vkj vU;
n'; fo/kk,¡

¼cPpk dh ykbuA ,d-,d cPpk c|vk d ikl tk jgk g½

igyk cPpk ½ ¼tych y|dj½ दू ठौ अउर दैओ न····ई तो कम है। ¼c|vk /kd|y n|rh g½

nljk cPpk ½ हमरा भाई का वास्ता तो····(c|vk /kd|y n|rh g½

rhljk cPpk½ हमरा जलेबी तो बहुतै छोटा है···· बड़ा दैउना····¼c|vk /kd|y n|rh g½

¼?khlk vkrk g vkj p|ipki nh gbl tych y|dj ikl e cBh egknoh th d lkeu flj >|dkdj i.kke djrk gA½

egknoh th½ ¼mld flj ij gkFk Qj dj½ तुम्हें और जलेबी नहीं चाहिए? ¼?khlk budkj e flj fgykrk g vkj ,d vkj pyk tkrk gA ckVu dk flyflyk pyrk jgrk gA½

n'; lekIr

u;k n';

¼?khlk dh dkBjhA ?khlk rt c[kkj e yVk gA ek fpfUrr-lh mldk ekFkk Nrh gA ,d c<h-vU/kh vkjr [kkV d ikl cBh gA½

ek ½ rki[6] तो आजौ बैठा है··· अब आज तो काम पर जाय का पड़ी ¼?khlk dk diM l vPNh rjg <drh g½ आजी fg;kgh बइठी हैं...बस तू उठब मत। ¼?khlk d ekFk ij gkFk Qjdj fudy tkrh gA ?khlk djoV ydj viuh fdrkc fudkyrk g---tjk-lh vkokt gkrh gA½

vkth ½ घीसू हिंयइ हैं न? ¼?khlk dk gkFk l VVkyrh g½ हाँ, बाहर न निकलि हैं बेटा।

?khlk ½ हूँ ¼?khlk fdrkc fudkydj i<u yxrk g½ सरपट, भगदड़ हलचल, अजगर।

vkth ½ ई का बोलत है रे?

?khlk ½ किछु नाहीं···आपन पाठ याद करत हैं (mnkl Loj e) आज तो पाठसालाओ लगी होई।

vkth ½ याही से तो बहू हम का बैइठाय गई···तू कहीं उठिके न चल देव।

¼,dk,d ckgj l xko d Xoky dh vkokt vkrh gA½

Xokyk ½ अरे सहर मा तो दंगा होय गवा···अइसा दंगा की खून की नदियाँ बइ गईं···हम तो जान बचा के आय गए सोई बड़ी बात···

¼?khlk ,dne pkdUuk gk tkrk g½

?khlk ½ आजी ग्वाला काका का बोलत रहा?

vkth ½ बोलत होई कछू···सहर से आयके रोज ही तो बोलत है कछु-न-कछु···अब हिंया नीम तले चौपाल लगाइके घण्टोइ तो भासण देइहै।

¼?khlk vkth dh rjQ n[krk g o eu cgykus d fy, QV xy l Hktu xku yxh gA ?khlk cgr /khj-/khj mrjdj ckgj fudyrk gA i|j tl dki jg gA ckgj dN nj ij uhe ry ,d Xokyk nk rhu vknfe;k d lkFk cBk g··· cxy e nj dh ckfYV;k j[kh gA ?khlk ogk rd vkrk gA½

?khlk ½ काका सहर मा का हुआ?

Xokyk ½ दंगा हुआ है भारी···लासें बिछी हैं सड़कों पर।

vkth ½ ¼dkBjh d njokt l ½ अरे घिसवा···कहाँ चला गया है···हम vk/kj-Å/kj कइसे एहिका राखी चरपाइया पर (टटोलती हुई बाहर निकलती है)

?khlk ½ ¼ykVdj½ पिसाब करै गया था···काहे सोर मचाय रही हो।

¼vkth VVkydj mlu idMrh g···ykdj l|ykrh gA½

vkth ½ अब सोय जा चुप करै···देख तो देह कइसी तो जल रही है।

?khlk ½ हाँ, सोवे ही तो जाइत हैं (yV tkrk gA FkkMh nj e vkth Hkh mldh [kfV;k dh ikVh ij flj j[kdj lk tkrh g---gYdk [kjkVA ?khlk tjk-lk [kVdk djd

ताप–बुखार; हिंयाही–यहीं; आँधर-ऊँधर–दृष्टिहीन।

n[krk g··· vkth ugh mBrh··· rk /khj l [kfV;k l mrjrk g··· pknj vk<rk g] nc iko ckgj fudyrk g] ij pyk ugh tkrkA ij dki jg g··· jkLr e dHkh fdlh pht dk lgkjk yrk g rk dHkh fdlh pht dkA FkkMh nj pyu ij gh egknoh th b/kj vkrh gb fey tkrh g··· ikl vkr gh mudh Vkxk l fpiV tkrk gA½

?khlk % आप सहर न जाएँ गुरुजी··· उहाँ बहुत दंगा होय रहा।

egknoh th % ¼mldk ekFkk Ndj½ अरे इतना तेज बुखार और तुम बाहर निकल आए?

?khlk % आप निकर जातिउ तो···सहर मा भारी मारकाट मची है···ग्वाला काका अपनी आँखिन से देखिके आए हैं। ¼ijk dk idMr g,½ हम आपका न जाय देब।

egknoh th% तुम पहले चलकर लेटो तो···

?khlk % नाहीं, पहले आप वचन देव कि आप सहर न जइबे।···¼cgr ;kpuk Hkj Loj e½ आज रात हमारी कुठरिया मा काट देव गुरुजी।

¼egknoh th ml idMdj fdlh rjg dkBjh e ykdj [kfV;k ij fyVkrh gA½

vkth % ¼gMcMkdj½ कउन है रे···घीसा···(gkFk l VVkydj n[krh g fd ?khlk gA½

?khlk % गुरुजी आई हैं। ¼egknoh th pkjk vkj n[kdj xjhch dk tk; tk yrh gA½

vkth % हम जानी तू चला गया रे···जायो न घीसा, तोहार माई गुस्सा होई।

¼yVu d ckn ?khlk dldj egknoh th d nkuk gkFk idM yrk gA egknoh th dh utj fljgku j[kh LyV-fdrkc ij tkrh gA LyV fy[kdj Hkj j[kh gA½

egknoh th% घीसा, देखो बेटे, मेरे पास कितने बच्चे हैं, जिनके माँ-बाप दूर शहरों में रहते हैं···मैं नहीं पहुँची तो वे कितने घबरा जाएँगे? ¼?khlk pi···gkFkk dh idM mruh gh etcr½ घीसा तो समझदार बच्चा है,,,,,ऐसी जिद तो कर ही नहीं सकता जिससे दूसरे बच्चों को तकलीफ हो। ¼dN nj Bgjdj½ अकेले रहकर कितना डर रहे होंगे वे बच्चे..माई-बाबा कोई पास नहीं, गुरुजी भी छोड़कर चली गईं और शहर का यह हाल···¼?khlk dh idM FkkMh <hyh gkrh gA½ अगर उन बच्चों को कुछ हो गया तो पाप तो गुरुजी को ही लगेगा न···भगवान कभी माफ नहीं करेगा गुरुजी को! ¼?khlk dh idM vkj <hyh gkrh g½ घीसा भगवान जी से सजा दिलवाएगा गुरुजी को? ¼?khlk gkFk NkM nrk gA egknoh th cgr l;kj l mld ekFk ij gkFk Qjrh g···ml vPNh rjg vk<krh gA½

egknoh th% मैं घाट से पुलिस लेकर जाऊँगी···कोई कुछ नहीं कर सकेगा मेरा···फिर जाकर अपने बच्चों को घीसा की बात बताऊँगी···हालात ठीक होते ही दवाई भेजूँगी तुम्हारे लिए, ले लेना। और देखो, जब तक बुखार न उतर जाए, पूरी तरह आराम करना।

¼?khlk dN ugh ckyrk···cl vk[kk d dkuk l vkl <yd iMr gA egknoh th viuh ue vk[kk l mld vkl ikNrh g···fQj fudy tkrh gA½

n'; lekIr

u;k n';

¼unh dk fdukjkA ?khlk ,dVd vku okyh ukok dk n[k jgk gA ,d uko l Xokyk dkdk viuh lkbfdy vkj n/k dh [kkyh Vfd;k mrkjrk gA ?khlk dk n[kdj½

Xokyk % क्यों रे घिसुआ, गुरुजी के लिए बइठा है? आजी नहीं आएँगी वो।

?khlk % ¼cMh mRlqdrk l½ काहे?

Xokyk % तबीयत ठीक नाहीं है उनका···डॉक्टर आराम करै का कहा है।

?khlk % तुम देखिके आए का काका?

Xokyk % अरे हम कहाँ देखेंगे? बुआ मिली रही घाट पर···गुरुजी ने बुआ को ही सन्देसा देए के खातिर भेजा था···सो ऊ हमका सन्देसा पकड़ाय दिए। ¼?khlk dk mnkl-fujk'k pgjk n[kdj½ हाँ, अगले इतवार का तुम लड़कन से मिलै की खातिर जरूर आवेंगी···पर पाठसाला नाहीं चलेगी अब···gok-cny वास्ते पहाड़ भेज रहे हं डॉक्टर।

हवा-बदल– आबो हवा बदलने।

¼dkdk rk lkbfdy ij viuh Vfd;k ck/kdj py nr gS---fujk'k grk'k-lk ?khlk ogh ?kkV ij cBdj unh dh vkj n[krk jgrk gA½

n'; lekIr

u;k n';

¼vxyk brokjA ikB'kkyk dk n';A egknoh th vkt i<k ugh jgh] cPpk l fonk y jgh g--- pgj l detkjh dk vkHkkl A ?khlk vuqifLFkr gA½

egknoh th % देखो बच्चो, जितना भी पढ़ा उसका अभ्यास करना···जितनी बातें सिखाईं, भूलना मत। खेलना···खूब खेलना लेकिन हुड़दंग नहीं।

,d yMdk % गुरुजी आप कब आएँगी?

cvk % अब न अइहैं···डाक्टर बोल दिया रहै कि हफ्ता मा एक दिन आराम तो बहुतै जरूरी है··· हिंया पाठसाला काओ कउन इंतिजाम करेंगी गुरुजी।

egknoh th % ¼pkjk vkj n[k dj½ आज घीसा नहीं आया। कोई उसे बुलाकर तो लाओ।

(,d yMdk nkM tkrk g½

nljk yMdk % गुरुजी, छुट्टी का दिन कोयला की लकीर खींच के गिनि हैं कि चूने की fVifd;k¹ गिनकर?

rhljk yMdk % गुरुजी, बरसात में तो हमार घर बहुत चुआत····ई किताब कइसे रखि हैं?

pkFkk yMdk % हमार घर मा तो चूहाओ बहुत···इत्ता दिन में कुतर डालि हैं तब?

¼yMdk nkMrk gvk vkrk gA½

yMdk % घीसा तो घर मा हइये नाहीं···आस पासौ नाहीं देखिल।

egknoh th% घर में नहीं है ¼vk'p;l l½ वह जानता तो था कि मैं आज आने वाली हूँ।

nljk yMdk % पाठसाला तो उहै साफ करि रही।

cvk % ¼egknoh th½ जिद करके आई तो गई पर अब जियादह देर न बइठने देहि हम···चलो उठो।

¼egknoh th mBrh g···nkuk py nrh g½

cPp % ¼lc ,d lkFk½ गुरुजी परनाम।

n'; lekIr

u;k n';

¼ogh fnuA ?kkV d ikl FkkMh-lh ,dkUr txg n[kdj egknoh th cB tkrh g···· ekuk mul [kMk ugh jgk tk jgk gA½

egknoh th% बुआ, नाव आ जाए तो उसे इधर ही ले आना। ¼cvk pyh tkrh gA egknoh th cMh [kkb-lh utjk l unh dh vkj n[k jgh g···· rHkh ihN l ,d cMk-lk rjcwt fy, ?khlk vkrk gA i|jkuk deht vkj dPNk igu g,A½

?khlk % गुरुजी! ¼pkddj egknoh th eMrh gA½

egknoh th% घीसा!····तुम कहाँ थे बेटे···· और ये इतना बड़ा तरबूज। (?khlk pi½ कहाँ से लाए ये तरबूज? ¼mudk eu e ,d 'kdk-lh mHkjrh g] tk mudk pgj ij Hkh >yd mBrh gA½

?khlk % खेत से! माई तो काम पर से लउटी ही नाहीं तो अकेले ही गए खेत पर।

egknoh th% तो क्या तोड़ लाए किसी के खेत से? ¼Loj e gYdh-lh l[rh····?khlk le> yrk gA½

?khlk %नाहीं.... नाहीं.....तोड़ा नाहीं......खरीदा......हम खरीदा।

egknoh th % माई तो काम पर से लौटी नहीं....पैसे किसने दिए?

?khlk % ¼flj uhpk djd½ पइसा तो नाहीं दिए?

egknoh th% तब ¼?khlk pi½ तब कैसे खरीदा?

?khlk % खेत वाला लड़िका कौ आपन नया कुरता दै दीन। बहुत दिना से वाहिकी नजर रही हमरे कुरता पर।

---

¹ टिपकियाँ–गोलियाँ।

egknsoh th ¼,dVd mldh vksj n[krh gS] l;kj ls····okRlY; ls½ नया कुरता दे दिया?

?khlk % ¼mUgsa vk'oLr djds d Hkko ls½ आप फिकिर ना करिहैं... गरमी मा तो हम कुरता पहिरित ही नाहीं। बाहर के वास्ते तो ई पुरानओ ठीक। ¼dN #ddj rjcwt c<krs gq, cgqr euqgkj Hkjs Loj esa½ आप हमार ई तरबूज ले लैव गुरुजी ¼Hkkokoss x ds dkj.k egknsoh th u dN cksy ikrh gS u fgyMqy ikrh gS½ आप न लेहइँ तो हम रात भर रौउबे···छुट्टी भर रौउबे और जो लै लेहिं तो रोज नहाय धोय के आपन पाठ याद करिबे··· ¼;kpuk Hkjs Loj esa½ लै लीजिए न गुरुजी......¼rjcwt vkxs c<rk gS½

¼Hkkokfrjsd ds dkj.k egknsoh th dk xyk fHkap tkrk gS] vk[ksa ue gks tkrh gSA rjcwt gkFk esa ysdj½

egknsoh th % इतना कीमती उपहार तो आज तक मुझे किसी ने नहीं दिया मेरे बच्चे! ([khapdj os ?khlk dks viuh Nkrh ls yxk yrh gS··· mudh vk[kksa ls vkalw cg fudyrs gSA½

n'; lekIr

u;k n';

¼ogh LFkku--- ogh le;! egknsoh th dh uko unh esa dN nwj pyh xbZ gS---?khlk ml tkrh gbZ uko dks ,dVd n[krk gqvk fdukjs ij [kM+k gSA dN nwj ?khlk ds vkalw Hkjs mnkl pgjs dk Qsdl fd;k tk,A½

lekIr

25-3 :ikarj.k ds Lo:i vkSj ifØ;k ij ppkZ

अभी आपने महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'घीसा' का मन्नू भंडारी द्वारा पटकथा में रूपांतरित रचना 'घीसा' को पढ़ा है। आप इसकी तुलना मूल रचना (इकाई 37) से करें। क्या आपने गौर किया कि इस रूपांतरण की प्रक्रिया में रचना में किस तरह के परिवर्तन हुए हैं। मूल कथ्य एक ग्रामीण गरीब बच्चे 'घीसा' पर ही केन्द्रित रहा है किन्तु उसे प्रस्तुत करने के क्रम में कई तरह का बदलाव आया है। महादेवी का रेखाचित्र पुरानी स्मृतियों के भीतर से एक सामान्य किन्तु मार्मिक प्रसंग पर आधारित है जिसमें वे इलाहाबाद में गंगा पार झूसी के खंडहरों के निकट गाँव के कुछ साधनहीन बच्चों के लिए साप्ताहिक पाठशाला शुरू करती हैं।

वहाँ एक अत्यंत गरीब और तिरस्कृत बच्चे घीसा की निष्कपट निष्ठा, पढ़ाई के प्रति उत्सुकता महादेवी जी को प्रभावित करती है। गुरुजी के प्रति उसका असीम स्नेह महादेवी में घीसा के लिए अतिरिक्त स्नेह जगाता है और अंत में उसकी अकाल मृत्यु की सूचना महादेवी के हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाती है।

रेखाचित्र किसी निकट रूप से परिचित का विवरण होता है जो फ्लैश बैक के माध्यम से अतीत और वर्तमान का रिश्ता जोड़ता है। अनुभूति की प्रगाढ़ता, कथ्य और शिल्प दोनों के माध्यम से प्रकट होती है। लेखक/लेखिका पुरानी घटनाओं और उनसे जुड़ी संवेदनाओं को शब्द-चित्रों के माध्यम से उभारते हैं। पटकथा भी शब्द-चित्रों के माध्यम से संवेदनाओं को रूप देती है। किंतु पहले घट चुकी घटनाओं का विवरण न देकर घटनाओं को घटित होता दिखाती है। लेखक/लेखिका संपूर्ण घटना व्यापार को दृश्य-श्रव्य कल्पना के माध्यम से वर्तमान में घटित होता प्रस्तुत करते हैं। इसके लिए उन्हें वर्णित न करके दृश्य रूप में प्रस्तुत करते हैं। पटकथा को कैमरे के सामने प्रस्तुत (मंचित) करके फिल्म बना ली जाती है ताकि उसे पर्दे पर दिखाया जा सके। इसके लिए रेखाचित्र या कथा के संपूर्ण कथ्य को नाटक की तरह दृश्यों में विभाजित कर लिया जाता है। एक खास जगह पर एक खास समयावधि में लगातार जो कुछ घटित होता है उसे एक दृश्य में प्रस्तुत किया जाता है। जहाँ घटना स्थल बदलता है वहीं दृश्य भी बदल जाता है।

हर दृश्य के ऊपर दृश्य संकेत के रूप में बताया जाता है कि वह कहाँ घटित हो रहा है और कब यानी किस समय (सवेरे-शाम-दोपहर-रात्रि) घटित हो रहा है।

इसके अलावा दृश्य स्थल भी बताया जाता है यानी दृश्य घर में, घर के बाहर, नदी किनारे, बाजार में, झोपड़ी में या जहाँ कहीं भी घटित हो रहा है।

यह भी उल्लेख होता है कि कौन-कौन-सा पात्र उस दृश्य में है तथा किस-किस साज-सामान (स्टेज प्रॉपर्टी) की जरूरत है। पटकथा का दृश्य-श्रव्य रूप वार्तालाप-कार्यकलाप और दृश्य संकेतों के रूप में नियोजित होता है यानी ''यह हुआ, फिर यह हुआ, फिर यह हुआ'' जैसा विवरण न देकर जो कुछ हो रहा है वह वर्तमान में सामने घटित होता दिखाया जाता है। इसके लिए पात्रों की परिकल्पना की जाती है। समस्त विवरण पात्रों के कार्यकलाप और दृश्य संकेत में रूपांतरित हो जाता है।

इस पटकथा में आपने देखा कि आरंभ में दृश्य संकेत देते हुए बताया गया है कि महादेवी जी अपने कमरे में कुछ लिख रही हैं वहीं उनकी सेविका आती है। दृश्य का आरंभ महादेवी और सेविका (बुआ) के वार्तालाप से होता है। महादेवी जी कहती हैं कि अगले दिन यानी इतवार को वह गंगा पार किसी गांव में– झूसी के खंडहरों में जाकर दिन बिताना चाहती है इसकी तैयारी कर लें। सेविका को उनकी यह योजना बिल्कुल पसंद नहीं आती। गौर कीजिए कि 'घीसा' नामक रेखाचित्र में वर्णित लेखिका का झूसी के प्रति आकर्षण उनकी झूसी यात्राएँ, वहाँ जाकर बच्चों को पढ़ाना, वहाँ नदी तथा नदी तट पर मिलने वाले लोगों स्त्री-पुरुषों, के लेखिका द्वारा खींचे गए शब्द-चित्रों को पर्दे पर अंकित करने के लिए पटकथा लेखिका ने छोटे-छोटे 18 दृश्यों का विधान किया है। पहला दृश्य झूसी के खंडहरों में जाने की योजना का है जिसमें महादेवी की चिरपरिचित सेविका भक्तिन के स्थान पर सेविका के रूप में एक अन्य पात्र बुआ की परिकल्पना की गई है ताकि लेखिका की झूसी जाकर बच्चों को पढ़ाने की घटना को दृश्य और संवाद में ढाला जा सके। झूसी के प्रति लेखिका के गहरे रुझान और उस रुझान के प्रति बुआ के अपनेपन और खीज को दोनों के संवादों द्वारा दिखाया गया है।

दूसरा दृश्य झूसी जाने का है। इसमें आरम्भ में ही लंबे दृश्य संकेतों के माध्यम से सुबह के समय नाव से यात्रा के संपूर्ण परिवेश को प्रस्तुत किया गया है। गीत गाते हुए मल्लाह, नदी किनारे पानी भरने आई औरतें, महादेवी को देखकर उनका चकित होना, महादेवी का गाँव जाना दिखाते हुए कैमरा गाँव की गलियों में गोबर और कीचड़, गरीब अधनंगे बच्चों पर घूमता है कुतूहलवश कुछ बच्चे उनके साथ हो जाते हैं। तभी कैमरा खुले मैदान की ओर घूम जाता है चबूतरे पर बैठी महादेवी बच्चों की शरारतें देखती हैं।

लगभग एक पृष्ठ का दृश्य संकेत और बीच-बीच में दो-चार पंक्तियों का वार्तालाप अगले भाग में घटित होने वाले महादेवी और ग्रामीण बच्चों के संवादों की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। महादेवी बच्चों को पढ़ाई शुरू कराने का आश्वासन देती हैं और बच्चे बहुत उत्साह से पढ़ाई करने को उत्सुक हैं। कैमरा गाँव की गलियों में घूमता है जहाँ खुशी की लहर दौड़ जाती है। यह प्रसन्नता प्रकट करने के लिए पटकथा लेखिका ने एक स्थान पर बैठे चिल्लम पीते ग्रामीण बुजुर्गों की कल्पना अपनी ओर से की है। ये बुजुर्ग महादेवी की बच्चों की पाठशाला आरम्भ करने की योजना पर खुशी जाहिर करते हैं। महादेवी के रेखाचित्र में यह बुजुर्ग नहीं है।

अगला दृश्य उसी दिन शाम को महादेवी की वापसी के लिए नाव की प्रतीक्षा का है फिर अगला दृश्य अगले इतवार को पाठशाला के प्रारंभ की तैयारी में घीसा के उत्साह का। इस दृश्य में न्यूनतम संवाद हैं। अगले दो दृश्य महादेवी के झूसी पहुँचने के हैं जिनमें केवल प्रस्तुति संकेत अथवा न्यूनतम संवाद हैं।

अगला (सातवाँ) दृश्य पाठशाला के आरम्भ और पढ़ाई की शुरूआत का है। अगले दृश्य में बुआ गाँव में जाकर औरतों से बातचीत करती हैं। इसके बाद आठवाँ दृश्य क्रमशः बुआ के द्वारा गाँव की औरतों का यह सुझाव महादेवी को बताने का है कि पाठशाला में घीसा को न आने दें। महादेवी इस राय की बिल्कुल परवाह नहीं करती। अगले दृश्य थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ रेखाचित्र के घटनाक्रम के लगभग अनुरूप हैं।

आखिरी दो दृश्य यानी पटकथा का अंत रेखाचित्र के अंत से अलग है। यहाँ घीसा द्वारा अपने कुरते के बदले लाए गए तरबूत को बेहद कीमती उपहार महसूस करते हुए महादेवी का हृदय द्रवित हो उठता है। वह उसे छाती से लगा लेती हैं। अंतिम दृश्य में उनकी नाव आगे बढ़ती है और उदास घीसा आँसू भरी आँखों से उसे देखता रहता है। कैमरा उसके उदास चेहरे पर फोकस करने के निर्देश के साथ पटकथा समाप्त हो जाती है।

रेखाचित्र का अंत अत्यधिक मार्मिक है। वहाँ महादेवी घीसा के दुनिया से चले जाने की सूचना भरे हृदय से देते हुए कहती है कि उसके छोटे से जीवन के उपेक्षित अंत के विषय में लिख पाने की शक्ति उनके पास नहीं है।

पटकथा को इतना दुखांत बनाना मन्नू भंडारी जी ने उचित नहीं समझा। अतः उसे घीसा की उदासी पर ही समाप्त कर दिया है।

ध्यान देने की बात है कि रेखाचित्र का पटकथा में रूपांतरण करने की प्रक्रिया में मूल रचना की केन्द्रीय संवेदना को भलीभाँति सुरक्षित रखा गया है। परिवर्तन रूपगत हुआ है वस्तुगत नहीं।

25-4 dFkkoLrq

iVdFkk dk vkjEHk

'घीसा' नामक पटकथा महादेवी जी के झूसी के आस-पास के एक गाँव में जाने की योजना बनाने और अगले दिन सवेरे वहाँ जाने से शुरू होती है। वहाँ के बच्चों की गतिविधियों उछल-कूद, उदंडता को देखकर बच्चों से बातचीत करते हुए जब महादेवी जी उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं तो बच्चों द्वारा अपने और अपने गाँव के अभावों के चलते पढ़ाई शुरू कर पाना असंभव बताया जाता है। जब महादेवी जी उन्हें बुनियादी साधन प्रदान कर उनके गाँव के बाहर ही एक पेड़ के नीचे पाठशाला चलाने का प्रस्ताव रखती हैं तो बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। गाँव के बुजुर्गों को इस बात का पता लगता है तो महादेवी के प्रति कृतज्ञता की भावना उनके मन में आती है। उधर महादेवी जी की परिचारिका बुआ को इतवार के दिन भी चैन से विश्राम न मिल पाने की संभावना कष्ट दे रही है। तभी एक स्त्री (घीसा की माँ), अपने बच्चे (घीसा) के साथ आती है। महादेवी से पूछती है कि क्या वह गाँव में पाठशाला खोल रही है? महादेवी समझ जाती है कि वह अपने बच्चे को पढ़ाना चाहती है और बच्चे को स्कूल आने को कह देती है। स्त्री उन्हें बालक के पितृविहीन होने की सूचना देने के साथ-साथ यह भी बताती है कि उसके स्त्री-स्वाभिमान और स्वावलंबन की आकांक्षा के कारण गाँव के लोग उसके विरोधी हैं। उसे गाँव में मेहनत मजदूरी का काम नहीं दिया जाता इसलिए दूर के गाँवों में जाना पड़ता है। उसके बच्चे को भी अन्य बच्चों से सौहार्द की बजाय डाँट-फटकार ही मिलती है। महादेवी उसे प्यार से पढ़ने बुलाती हैं तो बच्चा उनका उपकार मानते हुए इतवार को उनके आने से पहले अपनी माँ से ज़िद कर चबूतरा लिपवाता है और स्वयं आस-पास चारों तरफ झाड़ू लगाता है।

iVdFkk dk fodkl

घीसा महादेवी जी की प्रतीक्षा नदी तट पर करता है और पहुँचने पर उनका स्वागत करते हुए उन्हें नमस्कार करता है। उनके द्वारा लाया गया ब्लैक बोर्ड उठाकर पाठशाला में पहुँचाता है। महादेवी ब्लैक बोर्ड पर लिखना शुरू करती हैं तो वह ध्यान से उनकी ओर देखता हुआ समझना चाहता है कि वह क्या बता रही हैं। जबकि अन्य सभी बच्चे अपना ध्यान स्लेट-किताबों पर लगाए हैं। उन्हें पाने के लिए ऐसे झपटते हैं कि भगदड़-सी दिखाई देती है और बुआ को उन्हें डाँट कर काबू में करना पड़ता है। स्लेट-किताब मिलने पर कोई-कोई तो अपने भाई के लिए भी माँगने लगता है। घीसा को जब स्लेट-किताब मिलती है तो वह उसे सम्मान से माथे पर लगाता हुआ चुपचाप अपनी जगह जाकर बैठ जाता है।

वह जानता है कि अन्य बच्चे उसे अपने बराबर नहीं बैठने देंगे अतः कक्षा में वह सबसे पीछे की ओर हट कर बैठता है ताकि कोई उसे रोके-टोके नहीं। उसका पूरा ध्यान ब्लैक बोर्ड पर लिखे अक्षरों की ओर रहता है। वर्णमाला को दोहराते हुए अन्य बच्चों से अलग उसका व्यवहार, उसकी तल्लीनता महादेवी जी का ध्यान आकृष्ट करती है। वह उसे आगे आकर बैठने को कहती हैं। थोड़ी झिझक के साथ वह उठकर आगे आकर बैठता है तो अन्य बच्चे उससे अलग खिसक जाते हैं। महादेवी जी इस पर ध्यान देती हैं मगर कुछ कहती नहीं।

बुआ गाँव की औरतों से मिलने जाती हैं तो औरतें शंका प्रकट करती हैं कि मुफ्त में कोई क्यों पढ़ाएगा? कौन स्लेट-किताब देगा? किंतु बुआ महादेवी जी की समाज-सेवा भावना के विषय में उन्हें बताती है और महादेवी जी से अपनी निकटता की चर्चा करती है। मौका पाकर गाँव

की स्त्रियाँ महादेवी को संदेश भेजती हैं कि घीसा को पाठशाला में न बैठाएँ। वह पिता की मृत्यु के बाद पैदा हुआ है। इसलिए दूसरे बच्चों से दूर रखने लायक है। बुआ तो उन लोगों की बातों से प्रभावित हो जाती हैं किंतु जब महादेवी जी को यह संदेश मिलता है तो वह इस बात को कोई महत्त्व नहीं देतीं।

पढ़ाई के साथ-साथ महादेवी बच्चों को शरीर की सफाई के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास करती हैं। दाँत साफ करके, नहा के, साफ कपड़े पहन कर स्कूल आने की सीख देती हैं। कक्षा समाप्त होने के बाद सब बच्चे शोर मचाते हुए भाग जाते हैं तो घीसा दूर एक पेड़ के नीचे अपनी रोटी निकाल कर खाने लगता हैं।

अगले रविवार को जब पाठशाला लगती है तो महादेवी को महसूस होता है कि इस नितांत निर्धन गाँव के बच्चों को साफ कपड़े पहन कर आने का सुझाव देने से इनके परिवारों की विपन्नता और साधनहीनता उजागर हो उठी है। कपड़े या उन्हें धोने के लिए साबुन जुटाना इनके लिए कितना कठिन या लगभग असंभव सा है –

> *''महादेवी जी एक नज़र सारे बच्चों पर डालती हैं। किसी ने मुँह रंगड़ कर इतना साफ कर लिया है कि नकली चेहरे का अहसास देता है··· कोई केवल बनियान-कच्छा पहनकर ही आ गया है, कोई बड़े भाई की कमीज़ पहनकर आ गया··· एक विचित्र दृश्य उपस्थित है··· । सबने उनका आदेश माना है* xxx *इतने में घीसा आता दिखाई देता है* xxx *गीले बाल, गीले कपड़े पहने घीसा आँखें नीचे किए अपराधी की तरह गुरुजी के सामने आ खड़ा होता है। उसका रोम-रोम जैसे अपराध के लिए क्षमा याचना कर रहा हो।* xxx *देरी के वास्ते माफी।''*

महादेवी जी व्यथा से भीतर तक सिहर जाती है। थोड़ी देर पहले जो महादेवी बच्चों को सिखा रही थीं कि घीसा नहीं आया तो उन्हें ही सफाई कर लेनी चाहिए थी क्योंकि पाठशाला में पढ़ते तो सभी है, वही महादेवी अभावों के बावजूद बच्चों में आज्ञा पालन का भाव देखकर थोड़ी देर के लिए विकल हो जाती हैं।

अगले रविवार महादेवी जी बच्चों को जलेबी बँटवाती हैं। शोर मचाते हुए बच्चे एक बार पा लेने के बाद और माँगते हैं किन्तु घीसा अपना हिस्सा लेने के बाद और नहीं माँगता है बल्कि महादेवी जी जब प्यार से पूछती हैं कि तुम्हें और नहीं चाहिए तो वह सिर हिलाकर इनकार कर देता है।

अगले इतवार के दृश्य में घीसा बीमार है तेज़ बुखार है किंतु उसका मन पाठशाला में अटका हुआ है। पढ़ा हुआ पाठ दोहराता है। तभी ग्वाले से पता लगता है कि शहर में दंगा हो गया है। भयंकर मारकाट मची है।

घीसा को महादेवी की चिंता होती है और अत्यंत कमजोरी के बावजूद पाठशाला की ओर चल पड़ता है। उधर से महादेवी जी भी घीसा को देखने उसके घर की ओर चली आ रही हैं, शायद उन्हें उसकी बीमारी की सूचना मिली है। उन्हें देखकर घीसा उनकी टाँगों से लिपट जाता है और उनसे जिद करता है कि शहर वापस न जाएँ क्योंकि वहाँ दंगा हो रहा है उनके लिए खतरा है। घीसा की जिद के आगे उनका वश नहीं चलता तो वह समझाती है कि उनके पास बहुत से बच्चे हैं जो माता-पिता से दूर उन्हीं की देखभाल में रहते हैं। दंगे की हालत में उन बच्चों के पास जाना गुरुजी के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि उनके डर को दूर करने वाला कोई वहाँ नहीं है। ऐसी हालत में यदि उन्हें कोई भी नुकसान हो गया तो पाप तो गुरुजी को ही लगेगा। बहुत प्यार से घीसा के सिर पर हाथ फेरती हुई महादेवी उसे आश्वासन दिलाती हैं कि वह घाट से पुलिस की सुरक्षा में अपने निवास पर जाएंगी। घीसा उनकी बात मानकर ज़िद छोड़ देता है लेकिन आँसू उसकी चिंता व्यक्त कर देते हैं। बुखार ठीक न होने तक आराम करने की सलाह देते हुए महादेवी नम आँखों से बाहर निकल जाती हैं।

iVdFkk dh ifj.kfr

उसके बाद कई इतवार गुरुजी नहीं आतीं। घीसा नदी किनारे बैठा प्रतीक्षा करता है। ग्वाले से पता चलता है कि गुरु जी बीमार हैं और हवा-बदली के लिए पहाड़ पर जाने वाली है। जाने से पहले बच्चों से मिलने अगले इतवार को आएँगी। पर अब पाठशाला नहीं चला पाएँगी।

अगले दृश्य में महादेवी बच्चों से विदा लेने आती हैं। बच्चों से कहती हैं कि जो पढ़ा है उसे भूल न जाएँ बार-बार अभ्यास करें। बच्चे उनकी गैर मौजूदगी में अपनी पढ़ाई जारी रखने के

प्रति शंका अपने मासूम ढंग से व्यक्त करते हैं। किसी को बारिश में चूते घर से तो किसी को चूहों से किताब संभालने की चिंता हैं। घीसा को मौजूद न पाकर वह एक बच्चे को उसे बुलाने भेजती हैं। वह घर पर नहीं मिलता तो महादेवी को ताज्जुब होता है तभी एक बच्चा कहता है कि पाठशाला तो उसी ने साफ की है। बुआ कहती हैं ज्यादा देर न बैठें, अब आराम की जरूरत है। महादेवी वापस चल देती हैं।

तभी पीछे एक बड़ा-सा तरबूज लिए घीसा गुरुजी कह कर पुकारता है। यह जानकर कि उनके लिए यह उपहार लाने के लिए पैसों के अभाव में उसने अपना कुरता खेत वाले के लड़के को दे दिया महादेवी का हृदय भर आता है, गला भिंच जाता है। बच्चे का निस्वार्थ स्नेह पाकर वह तरबूज हाथ में ले लेती हैं यह कहते हुए *''इतना कीमती उपहार मुझे आज तक किसी ने नहीं दिया मेरे बच्चे।''*

उनकी जाती हुई नाव को उदास भाव से एकटक देखते घीसा पर फोकस करती हुई पटकथा समाप्त हो जाती है।

ck/k i:'u

1. रेखाचित्र को पटकथा में बदलते हुए 'घीसा' के कथानक की अंतिम परिणति में क्या कोई परिवर्तन किया गया है?

   .....

   .....

2. क्या रूपांतरण की प्रक्रिया में कोई नए पात्र पटकथा में लाए गए हैं?

   .....

   .....

   .....

vH;kl

1. किसी रचना को पटकथा में रूपांतरण करते समय क्या प्रक्रिया अपनाई जाती है? (10 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

25-5 pfj=-fp=.k

यह पटकथा चूँकि रेखाचित्र पर आधारित है अतः रेखाचित्र की लेखिका महादेवी वर्मा और घीसा नामक जिस बच्चे पर यह रेखाचित्र लिखा गया है वही इसके प्रमुख पात्र हैं। इनके अलावा बुआ, घीसा की माँ, गाँव की औरतें, पहला-दूसरा-तीसरा चौथा लड़का, आजी, ग्वाला, गाँव के दो-तीन बूढ़े थोड़ी-थोड़ी देर के लिए आते हैं।

egknsoh th

इलाहाबाद में गंगा के पास झूसी के किले के खंडहरों और उसके आसपास के गाँवों के प्रति महादेवी का विशेष आकर्षण उनके व्यक्तित्व की कई विशेषताओं को सामने लाता है। इनमें प्रमुख हैं समाज सेवा, जनजागरण और शिक्षा का प्रसार करने का प्रयास। यह सभी कार्य वह स्वप्रेरणा से वैयक्तिक रूप से करती हैं कोई प्रचार किए बगैर और किसी से कोई मांग किए बगैर। आम नगरवासियों की तरह वह अपना छुट्टी का दिन मित्रों से मिलने-जुलने या

मनोरंजन के लिए सैर सपाटों में गुजारने की बजाय गंगा किनारे के प्राचीन अवशेषों और आसपास की देहाती गरीब ग्रामीण बस्तियों में बिताना पसंद करती हैं। वहाँ के लोगों को नज़दीक से देखने और उनके जीवन की झलक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के अलावा वह उनके बच्चों के जीवन से खुद को जोड़ने, उनके जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। वह चाहती हैं कि भावी पीढ़ी सजग और शिक्षित होकर अच्छा नागरिक बने। इसलिए बिना किसी समुचित तालीम के इधर-उधर घूमते हुड़दंग मचाते ग्रामीण बच्चों से बातचीत करके उनके मन में पढ़ाई का आकर्षण जगाती हैं :

yMdk % पढ़ाइगा कौन... गुरुजी तो हइये नई?
nlljk yMdk % और सिलेट-किताब देगा कउन?
egknoh th % मैं पढ़ाऊँगी... स्लेट किताब भी मिलेगी फिर तो पढ़ोगे।
cPp % हाँ, तब तो जरूर पढ़ि हैं। (बच्चों के चेहरे पर उल्लास दिखाई देता है)।
egknoh th % ठीक है तो सब बच्चों को जाकर बता दो कि हर इतवार को यहाँ (पेड़ के नीचे इशारा करके) पाठशाला लगा करेगी... सब बच्चे पढ़ने आया करेंगे।

शिक्षा से वंचित बच्चों को पढ़ाने का प्रयास करती हुई महादेवी जी सप्ताह के अंत की अपनी एक छुट्टी इन बच्चों के लिए अनौपचारिक पाठशाला चलाने में बिताने लगती हैं।

वह न केवल अपना समय ही इन बच्चों की पढ़ाई शुरू करने में देती हैं बल्कि उनकी पढ़ाई के लिए सामान्य साधन भी अपनी ओर से जुटाती हैं जोकि गाँव के लोगों के लिए कौतुहल और संतोष की बात है–

क) *",d vkjr % हम सुना तो रहे कि पाठसाला खुलिहै .... पर भरोसा नाहीं हुआ... अरे कउन फोकट में आइके पढ़ाई... किताब सिलेट देइ।*
cvk % हमार दिदिया का न पूछो... जइसी ज्ञानी... वइसी ही दानी...अरे ई का...वहाँ सहर मा जाने का-का देत रहत हैं"

ख) *,d ctxl % ऊ जो सवेरे गाँव मा आई रहीं... पाठसाला खोले खातिर ही आई रहीं सायद।*
nljk % भला हो उनका... दो अच्छर इन निखट्टू लरिका को पढ़ा देइ तो ई भी अकिल की दो बात सीख जइहैं।
rhljk % अउर का...नाहीं तो सारा दिन हुड़दंग।

बच्चों को अक्षर-ज्ञान, शब्द-ज्ञान कराने के साथ महादेवी जी स्वच्छता, शिष्टाचार और परस्पर सम्मान की भावना भी बच्चों को सिखाती हैं। घीसा के प्रति सबका उपेक्षा का भाव देखते हुए उसे सबकी बराबरी में बैठने, पढ़ने की प्रेरणा देती हैं। उसके भीतर औरों के बराबर होने का आत्मविश्वास जगाती है।

महादेवी के व्यक्तित्व की सहिष्णुता के दर्शन इस पटकथा में जगह-जगह होते हैं। बच्चों की पढ़ाई की कोई व्यवस्था न देखकर वह उनके लिए साप्ताहिक पाठशाला शुरू करने की घोषणा कर देती हैं। शाम को जब वापस जाने के लिए गंगा तट पर नाव की प्रतीक्षा कर रही हैं तभी देखती है कि एक दरिद्र स्त्री अपने अर्धनग्न बच्चे के साथ उनके पास आती है। उससे पता चलता है कि गाँव के लोग उसका तथा उसके बच्चे का बहिष्कार करते हैं। उसकी वेदना को समझते हुए बच्चे को पढ़ने के लिए आने को कहती हैं।

महादेवी जी के व्यक्तित्व का जो पहलू इस पटकथा से उभरता है वह है उनकी संवेदनशीलता, करुणा और वात्सल्य का। गाँव के बच्चों को ठलुआ उछलते-कूदते शैतानी करते देख वह उन्हें शिक्षा और स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने की कोशिश करती हैं। उनकी दरिद्रता को समझते हुए उनकी पढ़ाई शुरू करने के लिए स्वयं साधन जुटाती हैं।

इसके साथ ही घीसा के प्रति गाँव में जो उपेक्षा और भेदभाव का वातावरण है उसे भी अपनी ओर से समाप्त करने का प्रयास करती हैं। उसे सबकी बराबरी का सम्मान कक्षा में दिलाती हैं। बुआ के माध्यम से गाँव की औरतों का संदेश मिलता है कि वह घीसा को पाठशाला में न आने दें। किंतु महादेवी जी उस पर ध्यान नहीं देतीं। अपनी विद्वेष रहित दृष्टि से वह घीसा के गुणों को देख पातीं हैं और उन गुणों की कद्र करती हैं। स्वाभाविक ही है कि बदले में वह उसका इतना अधिक निश्छल अनुराग पाती हैं कि उनकी आँखें बार-बार नम हो आती हैं।

बच्चों को रहन-सहन की सफाई के बारे में बताने के परिणामस्वरूप साधनहीन बच्चों का हुलिया जहाँ उनका मनोरंजन भी करता है वहीं यह भी अहसास कराती है कि इतनी विपन्नता की स्थिति में सफाई की सीख देना भी कितना विडम्बनापूर्ण सिद्ध हो सकता है।

घीसा की सरलता और सच्चाई उनके हृदय को बार-बार द्रवित करती है। उसकी अनुपस्थिति से चिंतित हो उसके घर जाती हैं।

बीमारी के कारण जब हर इतवार पाठशाला चलाना सम्भव नहीं रहा तो स्वास्थ्य-लाभ के लिए पहाड़ पर जाने से पहले वह अपने ग्रामीण छात्रों से मिलकर उनसे विदा लेने आती हैं। उन्हें यह ध्यान दिलाती हैं कि जो कुछ पढ़ा है उसका अभ्यास करना भूल मत जाना। वह हृदय से चाहती है कि बच्चे निठल्ले न रहें–साथ-सुथरे रहना सीखें, थोड़ा बहुत जो पढ़ा है उसे याद रखें। जब उन बच्चों के बीच घीसा नहीं दिखाई देता तो उसे बुलाने के लिए एक बच्चे को भेजती हैं। घर में घीसा के न होने की बात सुनकर चिंतित हो जाती हैं। जब घीसा एक बड़ा-सा तरबूज लिए प्रकट होता है तो उन्हें शंका होती है कि कहीं उसने चोरी तो नहीं की। जब उन्हें पता चलता है कि वह अपना नया कुरता देकर यह तरबूज खरीद लाया है तो बच्चे का निष्कपट प्रेम पाकर उनका वात्सल्य उमड़ आता है। भावातिरेक से उनकी आँखें नम हो जाती हैं बच्चे को गले लगा कर उनके मुख से यह शब्द निकल पड़ते हैं–*''इतना कीमती उपहार तो आज तक मुझे किसी ने नहीं दिया मेरे बच्चे।''*

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि इस पटकथा में महादेवी एक लोक कल्याण को समर्पित एक स्वयंसेवी लेखिका के रूप में उभरती हैं।

?kh l k

पटकथा का केंद्रीय पात्र घीसा नाम का बच्चा है। शिक्षा से वंचित बच्चों को पढ़ाने का महादेवी जी का प्रयास गाँव के सभी बच्चों के लिए था किन्तु घीसा नाम का यह बालक अपनी लगन और निष्ठा के कारण न केवल महादेवीजी का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करता है बल्कि अपने निस्वार्थ स्नेह के कारण उनके हृदय में स्थान बना लेता है। पाठशाला आरंभ होने की सूचना मिलते ही उसमें पढ़ने की इच्छा जागती है। वह जानता है कि गाँव के लोग –बड़े और बच्चे सभी– उसके प्रति हिकारत का भाव रखते हैं अतः अपनी माँ को लेकर महादेवी जी के पास आता है। माँ के पूछने पर *''आप हिंया पाठसाला खोल रही है?''* महादेवी समझ जाती हैं कि यह बच्चा भी पढ़ना चाहता है अतः माँ के प्रश्न के जवाब में बच्चे से पूछती है *''तुम पढ़ोगे उसमें?''* महादेवी के यह प्यार-भरे शब्द घीसा के स्वभाव के अनेक गुणों को प्रकट करने का माध्यम बन जाते हैं। पेड़ के नीचे जिस चबूतरे पर पाठशाला लगती है उसकी सफाई-लिपाई की जिम्मेदारी वह बिना किसी के आदेश के स्वयं अपनी सूझ-बूझ से अपने ऊपर ले लेता है। हर रविवार महादेवी के आने से पहले वह न केवल चबूतरे की बल्कि उसके आस-पास की ज़मीन की भरसक सफाई करता है। उसमें और अन्य बच्चों में बुनियादी अंतर यही है कि वह अपनी अक्ल लगाकर पाठशाला स्थल को स्वच्छ और व्यवस्थित करने की कोशिश करता है जबकि अन्य लड़कों का ध्यान उस तरफ जाता ही नहीं। वे गुल्ली-डंडा खेलने, पेड़ों पर चढ़ने या उछल-कूद में ही लगे रहते हैं। जब कभी घीसा सफाई न कर पाए तो अन्य कोई बच्चा इस ओर ध्यान ही नहीं देता। अन्य सभी बच्चे जब गुरुजी आ जाती हैं तब कक्षा में जाते हैं जबकि घीसा पाठशाला को व्यवस्थित करने के बाद गंगा किनारे पहुंच कर महादेवी के आने की प्रतीक्षा करता है। नाव में आती हुई दिखाई देती हैं तो न केवल झट से जाकर अन्य बच्चों को सूचित करता है बल्कि नाव में रखकर लाया गया ब्लैक बोर्ड अपने सिर पर उठा कर लाता है।

पढ़ाई में वह पूरा ध्यान लगाता है। पाठ अच्छी तरह से याद तो करता ही है जो कुछ सिखाया जाता है उसका अक्षरशः पालन करता है। कपड़े धोने के लिए साबुन जुटाने में विलम्ब के कारण जब वह गीले बाल और गीले कपड़े पहने, कक्षा में देर से आने के अपराध बोध से आँखें नीची किए गुरु जी के सामने खड़ा होता है तो महादेवी जी को एक क्षण महसूस होता है कि इन फटेहाल गरीबों से धुले हुए साफ कपड़े पहन कर आने को क्यों कहा? वे अपनी नम आँखें बच्चों से छिपाने के लिए बोर्ड की ओर मुड़ जाती हैं।

स्नेहपूर्ण होने के साथ-साथ अपनी ईमानदारी में भी घीसा अन्य बच्चों से अलग है। एक बार जब कक्षा में जलेबियाँ बंटती है तो अन्य सभी बच्चे किसी न किसी बहाने से और जलेबी माँगते

हैं पर घीसा चुपचाप जलेबी लेकर बैठ जाता है। महादेवी द्वारा पूछे जाने पर *''तुम्हें और जलेबी नहीं चाहिए?''* घीसा इनकार में सिर हिलाता है।

जब बीमार हो जाने के कारण वह स्कूल नहीं जा पाता तब तेज़ बुखार के बावजूद अपना पाठ बार-बार दुहराता है। बीमारी की हालत में जब उसे ग्वाले से पता चलता है कि इलाहाबाद शहर में दंगा हो गया है तो वह गुरु जी को शहर जाने से रोकने के लिए दौड़ पड़ता है। लड़खड़ाते काँपते पांवों से चलते हुए घीसा को जब गुरु जी रास्ते में मिल जाती हैं तो उसका गुरु जी के प्रति अपार स्नेह उमड़ पड़ता है। वह उनसे ज़िद करता है कि दंगे की हालत में शहर में हरगिज न जाएँ। महादेवी जी के बताने पर कि उनके पास ऐसे बच्चें हैं जो अपने माँ-बाप से दूर रहते हैं घीसा दुखी मन से अपनी ज़िद छोड़ देता है। वह समझ जाता है कि उन बच्चों के पास यदि गुरुजी नहीं पहुँचेगी तो यह उचित नहीं होगा।

पटकथा के अंत में, गुरु जी को विदा करते समय उनके प्रति घीसा की प्रेम भावना की चरम स्थिति में सामने आती है। जब वह अपने एकमात्र नये कुरते के बदले एक तरबूज गुरुजी के लिए ले आता है और उनसे उसे लेने का आग्रह करता हुआ कहता है ––

> *''आप हमार ई तरबूज ले लैव गुरुजी (भाववेश के कारण महादेवी भी न कुछ बोल पाती हैं न हिलडुल पाती हैं) आप न लेइहैं तो हम रात भर रौइबे··· छुट्टी भर रोइबे औ जो लै लेहिं तो रोज नहाय धोय के आपन पाठ याद करिबे··· (याचना भरे स्वर में लै लीजिए गुरु जी ···)*

महादेवी जी इस कीमती उपहार को हाथ में लेकर भाव विह्वल हो जाती हैं। इस तरह घीसा एक ऐसे बच्चे के रूप में चित्रित हुआ है जो न केवल अपनी उम्र से ज्यादा समझदार और जिम्मेदार है बल्कि ईमानदारीपूर्ण और सही काम ही करना चाहता है। महादेवी के प्रति उसका निश्छल स्नेह उनमें वात्सल्य भाव को जगा देता है।

यहाँ दो प्रमुख पात्रों पर चरित्र-चित्रण की दृष्टि से विचार किया गया है। अन्य पात्रों की विशेषताओं के आधार पर आप उनके चरित्र-चित्रण पर विचार कर सकते हैं।

25-6 ifjos'k

'घीसा' आजादी से पहले के भारतीय गाँव पर केन्द्रित रचना है। गाँव की गरीबी, गंदगी, शिक्षा के अभाव में बच्चों के मार्गदर्शन की कमी के परिवेश को चित्रित करता हुआ रेखाचित्र और उस पर आधारित पटकथा स्वेच्छा से ग्रामोत्थान कार्य में लगी लेखिका के प्रयास को उद्‌घाटित करती है। इस तरह इसका परिवेश सीधे-सीधे गाँव को चित्रित करने के साथ ही उन पढ़े-लिखे जागरूक नगरवासियों के प्रयासों को भी दर्ज करता है जो गुलाम भारत में अपने व्यक्तिगत प्रयासों से समाज की अशिक्षा और कुप्रथाओं या अंधविश्वासों को दूर करने में लगे थे। इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ जैसी संस्था को स्थापित कर संचालित करने वाली महादेवी वर्मा इस रचना में गंगा के उस पार झूसी के खंडहरों के निकटवर्ती गाँवों के लोगों के जीवन को निकटता से देखने और उसे यथासंभव सुधारने का प्रयास करती है। घीसा और उसकी विधवा माँ के प्रति जो हिकारत अथवा नापसंदी की भावना और लांछन लगाने की प्रवृत्ति गाँव में फैली है उसे भी वे दूर करने का अप्रत्यक्ष प्रयास करती हैं। उस स्त्री (घीसा की माँ) की आप बीती सुनकर उसकी आत्म-सम्मान की भावना को समझते हुए वह स्वयं घीसा को पाठशाला में बुलाती हैं उसे आगे आकर बैठने के लिए कह कर अन्य बच्चों के सामने स्पष्ट कर देती हैं कि उनके मन में घीसा अन्य बच्चों के समान है किसी से कमतर नहीं। लेकिन जब घीसा आगे आकर और बच्चों के पास बैठता है तो वे बच्चे उससे दूर खिसक जाते हैं। गाँव में किसी व्यक्ति को जाति बाहर या समाज बाहर करने की विद्वेषपूर्ण मानसिकता को उजागर करते हुए उसके शमन का प्रयास इस पटकथा/रेखाचित्र में हुआ है।

बुआ के माध्यम से शहराती परिवेश की उस मानसिकता को भी सामने रखा गया है जो गाँवों/ग्रामीण लोगों को अपने से हीन समझता है–

''हे भगवान! और कहीं जाने को नहीं मिला? अरे इतवार के दिन लोग सैर-सपाटे को निकलें··· मिलना-जुलना करें··· सलीमा-थियेटर देखें··· और ई जाएँगी झूसी xxx अरे सुन रहे हो तुम··· कल झूसी का सैर-सपाटा होयगा अब। बड़ा बाग-बगीचा है न वहाँ।''

जिस समय महादेवी जी ने अपने रेखाचित्र और संस्मरण लिखे थे वह स्वाधीनता आंदोलन और समाज-सुधार के प्रयासों का समय था। शिक्षा का प्रसार उन प्रयासों में से एक था। लोग अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग थे स्वयं तकलीफ उठाकर उन्हें निभाना चाहते थे। नई पीढ़ी यानी बच्चों के विकास के प्रति अपनी जिम्मेदारी महसूस करते हुए उनमें यह भावना जागी थी कि साधनहीन बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी ओर से कुछ प्रयास किया जाय। 'घीसा' नामक पटकथा/रेखाचित्र इसी भाव का विस्तार है। इसे पढ़ कर पता चलता है कि विपन्न स्थितियों में रहने वाले बच्चों का मार्गदर्शन करने पर वह न केवल मन लगाकर पढ़ने और अच्छी बात सीखने का प्रयास करते हैं बल्कि अच्छा मनुष्य बनने के प्रयास में जी-जान से लग जाते हैं। सफाई रखने की शिक्षा बच्चों द्वारा पालन इसका उदाहरण है। इस तरह शहरी और ग्रामीण समाज के विभिन्न वर्गों तथा मानसिकताओं के परिवेश को पाठक/दर्शक के सामने लाकर 'घीसा' भारतीय समाज की असलियत के कई रूप प्रस्तुत करता है।

ck/k iz'u

3. 'घीसा' पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों का 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए–
   - क) 'घीसा' के माध्यम से एक उन्नत गाँव की तस्वीर उभरती है। ( )
   - ख) महादेवी वर्मा यहाँ एक समाज-सुधारक महिला के रूप में उभरती हैं। ( )
   - ग) गाँव में शिक्षा और साधनों की कमी का वातावरण प्रस्तुत किया गया है। ( )
   - घ) विधवा स्त्री के प्रति दुर्व्यवहार यहाँ नहीं दिखाया गया है। ( )
4. निम्नलिखित में से कौन-सी बातें घीसा की माँ पर लागू होती है और कौन-सी नहीं। 'हां' या 'नहीं' में उत्तर दें:
   - क) घीसा की माँ स्वाभिमानी है। ( )
   - ख) उसका पति शहर में रहता है। ( )
   - ग) वह मेहनत-मजदूरी करके जीवन-यापन करती है। ( )
   - घ) घीसा को पढ़ाने की इच्छा उसमें नहीं है। ( )

vH;kl

2. महादेवी और घीसा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ 10-10 पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

25-7 lajpuk-f'kYi

Hkk"kk % हम चर्चा कर चुके हैं कि 'पट' और 'कथा' दो शब्दों से मिलकर बने शब्द 'पटकथा' का मायने पट अथवा पर्दे पर दिखाई जाने के लिए लिखी गई कथा है वास्तव में 'पटकथा' शब्द अंग्रेज़ी के 'स्क्रिप्ट' (script) शब्द का हिंदी अनुवाद है। टेलीविज़न पर सिनेमा जैसे इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों पर नाट्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई स्क्रिप्ट अथवा पटकथा की भाषा दर्शक और श्रोता के लिए सहज ग्राह्य और रोचक होनी चाहिए।

'घीसा' नामक पटकथा में लेखिका मन्नू भंडारी ने महादेवी के संस्मरण की चित्रात्मक भाषा को दैनिक व्यवहार की भाषा का रूप देने का प्रयास किया है। इस उद्देश्य से उन्होंने परिवेश और पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। पटकथा में बच्चों और बड़ों की समानांतर भूमिका है। महादेवी, बुआ, घीसा की माँ, आजी, ग्वाला और गाँव के स्त्री-पुरुष बड़े पात्र हैं। घीसा और शेष चार-पाँच लड़के बाल पात्र। पात्रों की भाषा उनकी उम्र और शिक्षा के अनुरूप है। खड़ी

बोली और अवधी दोनों का व्यवहार किया गया है। महादेवी जी अकेली खड़ी बोली बोलती हैं। शेष सभी पात्र अपने परिवेश और संस्कार के अनुकूल vo/kh बोलते हैं। तीस के दशक में जब यह रेखाचित्र लिखा गया था तब (और काफी हद तक आज भी) ग्रामीण अंचल के लोग अपनी बोली ही बोलते थे। इस दृष्टि से यह पटकथा यथार्थ पर आधारित है।

रोजमर्रा की भाषा का पैनापन पूरी पटकथा में मौजूद है। बुआ शहर में रहने वाली देहाती महिला है जो महादेवी को और साथ में अपने को भी झूसी गाँव के पात्रों से ऊपर का मानती है। उसकी भाषा में महादेवी के प्रति उलाहना है और ग्रामीणों के प्रति थोड़ा हिकारत का भाव–

d½ *"cqvk&हे भगवान! और कहीं जाने को न मिला? और इतवार के दिन लोग सैर सपाटे को निकले···· मिलना-जुलना करें,···· सलीमा-थिएटर देखें···· और ई जाएँगी झूसी''*

[k½ cqvk& अरे इत्ता बड़ा एक इसकूल उहाँ··· उससे पेट नाईं भरा जो अब पाठसाला हिंयाओ खुलेगी!····इतवार को कछु घड़ी चैन से सोते···बैठते, किसी से बतियाते सो अब इन लड़कन से माथा फोड़ो।

घीसा की माँ की भाषा में जीवन के कटु अनुभवों के तीखेपन और आक्रोश मिश्रित तार्किकता है *''गाँव वाले तो अइस बैर राखत हैं हमसें कि का बताईं···xxx बेवा होइ के बाद हम काहू के घर नाइ बइठै जौन से? हम नाहीं बैठ सकत कोई के घर। अब ई भी कोई जबरजस्ती है?···और हम सिंह का मेहरारू होयके सियारन के घर काहे जाब?''*

बच्चों की भाषा में लड़कपन की चंचलता है, उत्साह और जिज्ञासा है बाल सुलभ तार्किकता है–

क) *igyk cPpk % (जलेबी लेकर) दू ठौ अउर दैओ न····ई तो कम है। (बुआ धकेल देती है)*
nwl jk cPpk % हमरा भाई का वास्ता तो···(बुआ धकेल देती है)
rhl jk cPpk % हमरा जलेबी तो बहुत छोटा है···बड़ा देउना···(बुआ धकेल देती है)

ख) egknsoh th % तुम लोग पढ़ते हो? (बच्चे केवल एक-दूसरे की तरफ देखते हैं) स्कूल जाते हो तुम?
yM+dk % पाठसालाओ नाहीं हिंआ····कइसे जाएँगे?
egknsoh th% कोई पाठशाला नहीं यहाँ? (बच्चे केवल गर्दन हिला देते हैं। आश्चर्य से)–तो इस गाँव का कोई बच्चा पढ़ता ही नहीं?
yM+dk % सहर कउन जा सकत है पढ़ै की खातिर?
nwl jk yM+dk % रमेसर काका का लड़का जात है सहर····ऊँची किलास में पढ़त है···· अंग्रेजी भी।
(महादेवी जी सोच में पड़ जाती हैं)
egknsoh th % अगर पाठशाला हो तो पढ़ोगे (लड़के चुप···· एक दूसरे का मुँह देखते हैं) बोलो
yM+dk % किताब-सलेट तो हइये नाहीं पढ़िहैं कइसे?

ग) *nwl jk yM+dk % गुरु जी, छुट्टी का दिन कोयला की लकीर खींच के गिनि हैं कि चूने की टिपकियाँ गिनकर?*
rhl jk yM+dk % गुरु जी बरसात में तो हमार घर बहुत चुआत है····ई किताब कइसे रखि हैं?
pkSFkk yM+dk % हमार घर में तो चूहाओ बहुत····इत्ता दिन में कुतर डालि हैं तब?

अवधी भाषा का सहज प्रयोग पात्रों की भाषा में स्वाभाविकता पैदा करता है और झूसी के ग्रामीण इलाके के परिवेश की सृष्टि में सहायक बनता है। पात्रों की भाषा, तर्क और व्यंजना प्रधान है। परिणामस्वरूप दर्शक/पाठक को लगातार बाँधे रहती है उसके मन-मस्तिष्क को आकृष्ट किए रहती है।

dgkorksa vkSj eqgkojksa ds iz;ksx से पटकथा में चलती भाषा की रवानी पैदा हुई है–

''अरे हमार तो *बेमौत ही मरण है'*

''तुम गाँव वालों से *मेल-मुलाकात करके* आओ''

''अब यहाँ *मुँह सीकर तो बइठा* नहीं जाएगा''

''सो अब *इन लड़कन से माथा फोड़ो*।''

''हम *सिंह का मेहरारू हो इके सियारन* के घर काहे जाब?

''काहू के संग *मुंह काला करिस* है।

'kSyh

सामान्य बोलचाल की शैली में प्रस्तुत 'घीसा' नामक पटकथा में कई प्रकार का व्यंग्य मौजूद है। यह उस सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करती है जिसमें एक ओर तो गाँव गरीबी, अशिक्षा और उपेक्षा के शिकार हैं

> *,d cqtqxZ % ऊ जो सवेरे गाँव मा आई रहीं··· पाठशाला खोले खातिर ही आई रहीं सायद।*
>
> *nwljk % भलो हो उनका··· दो अच्छर इन निखट्टू लरिका को पढ़ा देइ तो ई भी अकिल की दुई बात सीख जइहैं।*
>
> *rhljk % अउर का··· नहीं तो सारा दिन हुड़दंग।*

दूसरी ओर स्त्रियों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर भी व्यंग्य है। विधवा स्त्री-पुरुष प्रधान मानसिकता की शिकार है। उसका बच्चा गाँव वालों की विद्वेष दृष्टि का शिकार इसलिए है कि माँ की स्वाभिमान की भावना गाँव वालों की मर्जी के अनुरूप आचरण नहीं करती। वह मेहनत करके अपना और अपने बच्चे का जीवन यापन करना चाहती है, गाँव के किसी व्यक्ति की दया का पात्र नहीं बनना चाहती। नीचे दिए गए उदाहरणों में से (क) में विधवा स्त्री द्वारा अपना कष्ट बताया गया है और (ख) में गाँव के लोगों के व्यवहार का उदाहरण दिया गया है–

क) *L=h % का करि? दूसरा का घरन मा लीप-पोत के बस गुजारा करत हैं··· ई काम भी तो नाहीं करे देते हैं गाँव वाला हम का··· दो कोस दूर जाइ पड़त है··· गाँव वाले तो अइस बैर राखत हैं हमसे कि का बताई···'*

ख) *,d vkSjr % थोड़ा पास सरक कर, आवाज को धीमा करके तो फिर तुम एक बार गुरुआइन जी से जरूर बोल देव··· घीसा का न बिठाया करें पाठसाला मा··· ठीक नाहीं ऊ लरिका।*

cqvk % काहे?

vkSjr % (गर्दन झटक कर) बाप का कौनों पता नाहीं··· बेवा भई तो कित्ते लोग घर बिठाइवे का बोले रहे पर नाहीं··· बड़े घरन की सती-सावतरी का ढोंग··· अउर फिर जाने काहू के संग मुँह काला करिस है।

cqvk % अच्छा?

vkSjr % अउर का? अरे जायि कछु ऊँचा-नीचा हुई भी गवा तो (हाथ के इशारे से संकेत करती है) पर नाहीं बच्चाओ जनेंगी हम सब की छाती पर··· । हम तो अपना लरकन-बच्चन से कहि दीन कि दूरै रहा करें···गन्द का ढेर।

संस्मरणात्मक रेखाचित्र पर आधारित होने के कारण इस पटकथा में व्यक्ति-व्यंजक शैली भी मौजूद है महादेवी का घीसा के प्रति स्नेह भाव, बच्चे के निस्वार्थ प्रेम को पाकर उनकी विह्ललता इस पटकथा में आत्म-व्यंजक शैली का समावेश करती है।

> *egknsoh th % bruk dherh migkj rks vkt rd eq>s fdlh us ugha fn;k esjs cPps! (खींच कर वे घीसा को अपनी छाती से लगा लेती हैं·· उनकी आँखों से आँसू बह निकलते हैं।)*

laokn

'घीसा' नामक रेखाचित्र को पटकथा में रूपांतरित करते हुए समस्त विवरण को प्रत्यक्ष कार्यकलाप में रूपांतरित करते हुए उसे पात्रों के संवादों तथा उनके कार्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। संवाद विभिन्न पात्रों की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति और मानसिकता के अनुरूप हैं। उनमें रोजमर्रा के वार्तालाप की रवानी है। बच्चों की प्रमुख भूमिका होने के कारण संवादों में बालसुलभ जिज्ञासा है, तर्क है, कौतुहल है, उत्साह है, सहजता है–

> *yM+dk % सहर कउन जा सकत है पढ़ै की खातिर?*
>
> *nwljk yM+dk % रामेसर काका का लड़का जात है सहर··· ऊँची किलास में पढ़त है··· अंग्रेजी भी। (महादेवी जी जैसे सोच में पड़ जाती हैं)*
>
> *egknsoh th % अगर पाठशाला हो तो पढ़ोगे? (लड़के चुप···एक-दूसरे का मुँह देखते हैं) बोलो!*
>
> *yM+dk % किताब सलेट तो हइये नाहीं पढ़िहैं कइसे?*

egknsoh th% *अच्छा, अगर किताब-स्लेट मिले तो पढ़ोगे? (बच्चे थोड़ी देर चुप) मन करता है पढ़ने का?*

yM+dk % *पढ़ाइगा कउन··· गुरुजी तो हइये नई।*

nwljk yM+dk % *और सिलेट किताब देगा कउन?*

egknsoh th % *मैं पढ़ाऊँगी···स्लेट-किताब भी मिलेगी फिर तो पढ़ोगे?*

cPps % *हाँ, तब तो जरूर पढ़ि हैं। (बच्चों के चेहरे पर उल्लास दिखाई देता है)*

'घीसा' के संवाद छोटे-छोटे और स्वाभाविक हैं। कथा को आगे बढ़ाते हुए दर्शक की जिज्ञासा को कायम रखते हैं। कक्षा में छात्र और अध्यापिका के बीच के संवाद हों या गाँव की स्त्रियों की बातचीत संवाद पात्रानुकूल और स्वाभाविक हैं। बीमारी के कारण घीसा के पाठशाला न जा पाने की स्थिति हो या ग्वाले से शहर के दंगे की खबर सुनकर बीमारी की हालत में घीसा के महादेवी जी के पास पहुँचने के प्रयास की स्थिति संवाद सहज, स्वाभाविक और मार्मिक हैं। लंबे-लंबे रंग-संकेतों (प्रस्तुति संकेतों) के द्वारा संवादों को प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है।

25-8 n`';kRedrk vkSj izLrqfr-f'kYi

घीसा में चार-पाँच बाल पात्र हैं तथा पाँच स्त्री पात्र और तीन पुरुष पात्र। बाल पात्रों और तीन स्त्री पात्रों –महादेवी, बुआ, घीसा की माँ– और ग्वाले को छोड़ शेष बड़े पात्र बहुत ही थोड़ी देर को आए हैं। पटकथा की प्रस्तुति की दृष्टि से यह पर्याप्त व्यावहारिक और सुविधाजनक स्थिति है। ध्यान दें कि नाटक अथवा एकांकी और पटकथा दोनों ही अभिनय के माध्यम से दृश्य बनाए जाते हैं। किन्तु दोनों की प्रस्तुति का स्वरूप नितांत भिन्न होता है। नाटक दर्शकों के समक्ष मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। जीते-जागते अभिनेता- अभिनेत्रियाँ उसे सजीव रूप में दिखाते हैं। घटना का स्थान और परिस्थिति दिखाने के लिए मंच पर साज-सज्जा की जाती है, स्टेज प्रॉपर्टी का इस्तेमाल किया जाता है। इसके विपरीत पटकथा स्टूडियो के भीतर अथवा बाहर कहीं उपयुक्त स्थान/स्थानों पर फिल्माई जाती है। अभिनय वहाँ भी किया जाता है किंतु अभिनेता-अभिनेत्री दर्शकों के सामने नहीं कैमरे के सामने प्रस्तुति करते हैं। इसके भिन्न-भिन्न दृश्य अथवा एक ही दृश्य के विभिन्न हिस्से अलग-अलग स्थानों पर फिल्माए जा सकते हैं–दूर-दूर जाकर फिल्माए जा सकते हैं, टुकड़ों-टुकड़ों में फिल्मा कर उन्हें जोड़ा जा सकता है। अतः इसमें अभिनय का महत्त्व तो अपनी जगह होता ही है दृश्य-संकेतों, रंग-निर्देशों का बहुत अधिक महत्त्व होता है। आपने गौर किया होगा कि 'घीसा' में संवाद और दृश्य निर्देश तथा रंग संकेत लगभग समान तादाद में हैं। कभी-कभी तो पूरा-का-पूरा दृश्य ही रंग-संकेत का है जैसे तीसरा दृश्य या आखिरी दृश्य। अधिकांश कार्य व्यापार का विकास और पात्रों की मानसिकता इन संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। कैमरा कहाँ-कहाँ घूमेगा यानी क्या-क्या दृश्य दिखाएगा यह संकेत यहाँ दिया गया है।

अभिनय की दृष्टि से अथवा फिल्माने की दृष्टि से पटकथाकार ने प्रस्तुति की बारीकियों पर पूरा ध्यान दिया है।

cks/k iz'u

5. (×) और (√) गलत का निशान लगाकर उत्तर दीजिए।
   - क) 'घीसा' में केवल खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है ( )
   - ख) सभी पात्र एक-सी भाषा बोलते हैं ( )
   - ग) भाषा पात्रानुकूल है ( )
   - घ) भाषा में बोलचाल की रवानी है ( )
6. 'घीसा' पटकथा में रेखाचित्र और पटकथा पढ़िए और उसमें प्रयुक्त मुहावरों और कहावतों का अर्थ बताइए।

....

....

....

....

....

....

vH;kl

3. घीसा के संवादों की विशेषताएँ चार पंक्तियों में बताइए।

....

....

....

....

....

4. दृश्यात्मकता की दृष्टि से घीसा पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

25-9 eY;kdu

आपने महादेवी वर्मा के प्रख्यात रेखाचित्र 'घीसा' पर आधारित मन्नू भंडारी द्वारा लिखित पटकथा का इस इकाई में अध्ययन किया है। इस भाग में हम इस पटकथा का मूल्यांकन करेंगे। मूल्यांकन के अंतर्गत रचना का उद्देश्य और शीर्षक पर टिप्पणी की गई है।

i.fr ik|

इस इकाई के पिछले भागों में 'घीसा' नामक पटकथा को पढ़ने का बाद आपने कथावस्तु, पात्र, शिल्प संरचना आदि विभिन्न पक्षों से उसके बारे में जानकारी हासिल की है। आप अब समझ गए होंगे कि इस पटकथा का उद्देश्य एक ग्रामीण गरीब बच्चे को केंद्र में रखते हुए सामाजिक न्याय, गाँव में शिक्षा का अभाव, शहर में दंगों से उत्पन्न तनाव, गरीबी आदि जैसे कई प्रश्न उठाना है। इसके साथ ही यह पटकथा शहरी और ग्रामीण लोगों कि बीच सुविधा-सम्पन्न और वंचित वर्गों के बीच परस्पर सहयोगी संबंधों की जरूरत को भी रेखांकित करती है। महादेवी की झूसी के खंडहरों के आस-पास के इलाके में दिलचस्पी वास्तव में भारतीय जन को निकट से जानने की उनकी आकांक्षा की अभिव्यक्ति है। यही कारण है कि केवल बच्चों को पढ़ाने का प्रसंग ही नहीं लिया गया है। उसके साथ-साथ मल्लाहों, ग्वालों, गाँव की स्त्रियों-पुरुषों की मानसिकता, महादेवी के प्रति उनके मन में जिज्ञासा और सम्मान के भाव को भी उकेरा गया है।

शिक्षित और अशिक्षित, शहरी और देहाती समाज को जोड़ने की आवश्यकता और जोड़ने के तरीके को प्रस्तुत करती यह पटकथा संवेदना के स्तर पर काफी मार्मिक है। सभी लोगों से उपेक्षा पाने का आदी बच्चा घीसा महादेवी का स्नेह पाकर निस्वार्थ भाव से उनको स्नेह और आदर प्रदान कर उठता है उनसे भावनात्मक रूप से उसका यह जुड़ाव उसके गुणों को उभरने का अवसर देता है। पाठशाला की सफाई, महादेवी जी की प्रतीक्षा, उनके सामान के उठा कर लाना, उनकी आज्ञा का अक्षरशः पालन, दंगों के बारे में सुन कर उनकी सुरक्षा की चिंता और उनसे शहर न जाकर गाँव में रुके रहने का आग्रह जैसे कार्यकलाप घीसा को जैसे बचपन में ही परिपक्व बना देते हैं।

कुल मिलाकर 'घीसा' का प्रतिपाद्य सामाजिक सरोकारों को उभार कर पाठक/दर्शक की संवेदना को अपने आसपास के परिवेश के प्रति जागरूक और दायित्वपूर्ण बनाना है।

'kh"kd % संपूर्ण कथानक घीसा को केंद्र में रखकर चलता है अतः उसके नाम को ही शीर्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस दृष्टि से 'घीसा' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त और संप्रेषणीय है।

25-10 lkjka'k

प्रस्तुत इकाई में आपने महादेवी वर्मा के 'घीसा' नामक रेखाचित्र का मन्नू भंडारी द्वारा किया गया 'पटकथा' में रूपांतरण पढ़ा। इस प्रक्रिया में आपने एक ही कथ्य को दो अलग-अलग माध्यमों के लिए प्रस्तुत किए जाने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की। पढ़ने के लिए प्रस्तुत

की गई रचना को दृश्य रूप में पर्दे पर देखने की अपेक्षाओं के अनुरूप ढाले जाने की प्रक्रिया को आपने समझा। इसके साथ ही आपने इसके संवेदना और संरचना-शिल्प की जानकारी भी प्राप्त की। इसके लिए कथानक, चरित्र-चित्रण, परिवेश, भाषा आदि की दृष्टि से घीसा का अध्ययन किया। अब आप इस पटकथा के विषय में जानकारी दे सकते हैं, इसका विश्लेषण कर सकते हैं।

25-11 'kCnkoyh

vonku % योगदान
frjLÑr % उपेक्षित, जिसे सब दूर रखते हों
LVst-izkWiVh % नाटक के मंच पर इस्तेमाल किया जाने वाला साज-सामान
Hkkokfrjsd % भावुकता

25-12 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

cks/k iz'u

1. अंतिम परिणति में घीसा की असामयिक मृत्यु के प्रसंग को पटकथा में शामिल नहीं किया गया है और उसे घीसा द्वारा महादेवी जी को तरबूज भेंट करने के साथ समाप्त कर दिया गया है।
2. पटकथा में गाँव के वृद्ध लोगों की बातचीत को शामिल किया गया है, जो रेखाचित्र में नहीं है।
3. क) नहीं; ख) हाँ; ग) हाँ; घ) नहीं
4. क) हाँ; ख) नहीं; ग) हाँ; घ) नहीं
5. क) × ख) × ग) √; घ) √
6. उत्तर स्वयं लिखिए।

vH;kl

1. अपने उत्तर को भाग 25.3 से मिलाकर स्वयं जाँचिए।
2. उत्तर भाग 25.5 के आधार पर लिखिए।
3. उत्तर भाग 25.7 के आधार पर लिखिए।
4. उत्तर भाग 25.8 के आधार पर लिखिए।

[kaM ds fy, mi;ksxh iqLrdsa

- *डॉ. सिद्धनाथ कुमार, 'हिंदी एकांकी की शिल्पविधि का विकास'*, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
- *डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, 'हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार'* साहित्य रत्न भंडार, आगरा।
- *मनोहर श्याम जोशी, 'पटकथा लेखनः एक परिचय'*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
- *मन्नू भंडारी, कथा-पटकथा,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली।